इतिहास–चिन्तन और अन्य अस्वाभाविक कर्म

❑ सैम वाईनबर्ग

अनुवाद - आनन्द कुमार

यह लेख अमेरिकी समाज का विश्लेषण होने के बावजूद इतिहास पर हमारे यहाँ चल रही बहस का ही हिस्सा लगता है। 'कैसा इतिहास' इस प्रश्न पर इतिहास के राष्ट्रीय मानकों के विषय में बहस इतनी उलझी हुई है कि हम लोग इस मूल प्रश्न को ही भूल गये हैं कि इतिहास पढ़े ही क्यों ? सैम वाइनबर्ग कहते हैं कि इतिहास अतीत के साथ परिचय या मुठभेड़ पर निर्भर तनाव में निहित है । परिचित एवं अपरिचित के बीच का तनाव, जिन लोगों को हम समझना चाहते हैं उससे सन्निकटता का अनुभव एवं उनसे दूरी के अनुभव के बीच का तनाव । इनमें से कोई भी छोर इतिहास की जटिलता के साथ पूरी तरह न्याय नहीं करता है। परिपक्व इतिहासपरक चिन्तन के सारतत्व को जान पाना मुख्यत: इतिहास के कठिन स्थलों की ओर हमारी यात्रा करने की योग्यता पर निर्भर करता है । साथ ही साथ उस भू-भाग को पार करने पर जो समानता के दोनों छोरों एवं अतीत से दूरी के बीच है । लेख में सैम वाईनबर्ग कुछ इतिवृत्तों के विश्लेषण द्वारा इस धारणा को पुष्ट करते हैं ।

सैम वाईनबर्ग शिक्षा महाविद्यालय के शैक्षिक मनोविज्ञान विभाग में प्रोफेसर हैं । वाईनबर्ग इतिहास बोध बनाने संबंधी परियोजना के निदेशक भी हैं जो स्पेन्सर फाउन्डेशन द्वारा अनुदानित है लेकिन यहां व्यक्त विचार उनके अपने हैं । इस लेख का प्रारंभिक संस्करण अमेरिकी इतिहास संघ न्यूयार्क की वार्षिक बैठक में 1997 में प्रस्तुत किया गया था ।

सेन ने पूछा 'जार्ज वाशिंगटन या वार्ट सिम्पसन'? यह विकल्प बिल्कुल ही असंगत लग रहा था लेकिन यह इतिहास-शिक्षण के राष्ट्रीय मानकों के संदर्भ में चली बहस की बड़ी ही सटीक बयानबाजी कर रहा था । स्लेड गॉर्टन ने संसदीय बहस के दौरान यह सवाल उठाया कि कौन सा ऐसा ऐतिहासिक व्यक्तित्व है जो ''हमारे राष्ट्र के इतिहास में इतना महत्वपूर्ण रहा है जिसे हमारे बच्चे पढ़ें'' ?[1] गार्टन की नजर में इतिहास-शिक्षण के प्रस्तावित राष्ट्रीय मानक सीधे-सीधे अमेरिकी सभ्यता पर आक्रमण का प्रतिनिधित्व करते हैं। ''ये आक्रमण एक खास तरह की विचारधारा से प्रेरित हैं। यह विचारधारा पश्चिम की सभ्यता के विरोध का गढ़ तो है ही एक विशिष्ट वातावरण में राजनैतिक तौर से सही भी है ।''[2] सीनेट ने स्पष्ट सहमति से इतिहास-शिक्षण के इन मानकों को 99-1 के मत से खारिज कर दिया ।

इन मानकों के निर्माताओं ने उपरोक्त अस्वीकृति को दर्ज करने से इंकार कर दिया । गैरी नैश, चैरलौट क्रैबट्री और रॉस डॉन की टीम ने कई पैनलों एवं समितियों की रिपोर्टों को आपस में मिलाकर देखा तथा 318 पृष्ठों का एक खण्डन जारी किया, जो कि गॉर्टन, उसके मुख्य समर्थक लिन चेनी एवं उसके कई अन्य रूढ़िवादी सहयोगियों के खण्डन से भरा था । उनमें से कई लोग अखबारों के स्तम्भ लेखक तथा रेडियो वार्ता के आयोजक थे । हालांकि नैश और उसके सहयोगियों ने स्वीकार किया कि गॉर्टन का यह दावा सही है कि कोई भी मानक स्पष्ट रूप से जार्ज वाशिंगटन को प्रथम राष्ट्रपति नहीं मानता, किंतु यह मात्र एक तकनीकी मसले से ज्यादा कुछ भी नहीं है। इन मानकों के तहत स्कूली छात्रों को ''(वाशिंगटन के) राष्ट्रपतित्व के दौरान नवजात देश के समक्ष मुख्य समस्याओं का परीक्षण करने के लिए कहा गया था'' और इन्ही मानकों के अनुसार वाशिंगटन पर 'हमारे देश के निर्माता' के रूप में ग्रेड के- 4 में काफी सामग्री थी ।[3] चेनी ने दावा किया कि राबर्ट ई. ली या राईट ब्रदर्स जैसे अमेरिकी इससे (इतिहास में दर्ज राष्ट्र-निर्माता) अलग कर दिए गए थे क्योंकि यह उनका दुर्भाग्य था कि वे श्वेत थे, पुरूष थे तथा वे मर गये थे (स.-इनके मुताबिक इतिहास के नये मानक स्त्रियों और अश्वेतों को बढ़ावा देते हैं) । इसके उत्तर में नैश और उसके सहयोगियों ने 700 से ज्यादा ऐसे लोगों का नाम और जोड़ दिया जो इस तरह के विवरण के दायरे में सटीक बैठते थे तथा यह घोषणा की कि यह संख्या ''राष्ट्र के निर्माताओं के रूप में दर्ज सभी स्त्रियों, अफ्रीकी मूल के अमेरिकियों, लातीनियों और इंडियनों की कुल संख्या से कई गुना ज्यादा है ।[4]

1. हिस्ट्री ऑन ट्रायल : कल्चर वार्स एण्ड द टीचिंग ऑफ द पास्ट (न्यूयार्क : नॉफ, 1997, पृष्ठ - 232) - गैरी वी. नैश, चैरलौट क्रैबट्री और रॉस डॉन।
2. वही, पृ. 234
3. वही, पृ. 197
4. वही, पृ. 204

मानकों के इस वाद-विवाद में जैसे को तैसा ही एक मानक हो गया । किन्तु इस सतह से ठीक नीचे नामों की गिनती ने और भी भयानक रूप धारण कर लिया । प्रत्येक पक्ष ने यह आरोप लगाना जरूरी समझा कि दूसरे पक्ष के उद्देश्य निम्न स्तर के हैं तथा वे स्वार्थों के चलते ऐसा कर रहे हैं । इसलिए 1996 में राष्ट्रपति पद के रिपब्लिक पार्टी के उम्मीदवार बॉब डॉल ने राष्ट्रीय मानक उन लोगों की करनी को माना जो उनकी नजर में ''बाहरी शत्रुओं से भी बुरे हैं'' ।[5] नैश की टीम के विचार में मानकों की यह आलोचना बहुलतावादी अमेरिका के एक गुप्त भय से संचालित है। यह भय इतिहास के रंगमंच पर कुछ नये चेहरों के आगमन की वहज से है। इन नये चेहरों ने अतीत की पुरानी व्याख्या से बने खांचे के स्वरूप तथा उससे जुड़े हुए सुरक्षा बोध को तहस-नहस कर दिया है ।[6] गालियों की शब्दावली में कहें तो ऐसे उपद्रव को उचित ठहराने का मानक जिन्होंने बनाया वे राष्ट्रद्रोही तथा धोखेबाज थे और जिन्होंने इन मानकों का विरोध किया, वे नस्लवादी थे ।

इस वाद-विवाद से उपजे विद्वेष ने द्विआयामी चिंतन के लिए एक मजबूत आधार दिया । मसलन अमेरिकी विद्वानों द्वारा संगठित फोरम राष्ट्रीय मानद सोसाइटी के आधिकारिक प्रकाशन *'फी विटा कप्पा'* को उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है।[7] अमेरिकी विद्वानों की इस सोसाइटी ने 'हमारे बच्चों को किस प्रकार का इतिहास पढ़ना चाहिए', इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए ग्यारह प्रमुख इतिहासकारों को एक हजार शब्द लिखने को कहा। क्या बच्चे 'राष्ट्रभक्ति, वीरता और राष्ट्र के आदर्शों' को पढ़ें या 'अन्यायों, पराजयों और प्रभावशाली वर्ग और नेताओं के पाखण्डों को पढ़ें'? जब पैनल में शामिल इतिहासकारों द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली तो उन्हें फिर से कहा गया कि क्या संयुक्त राज्य 'ऐतिहासिक सफलता की कहानियों में से एक' का प्रतिनिधित्व करता है या 'एक हार के बाद एक अवसर की कहानी' है । सौभाग्य से इस अकादमिक खिलवाड़ में भी विवेक बरकरार रहा । येल विश्वविद्यालय के एडमंड मॉर्गन जो कि *'स्टाम्प एक्ट क्राइसिस'* के लेखक हैं और किसी अन्य इतिहासकार ने भी, प्रचार मात्र के लिए भी, कोई टिप्पणी नहीं की। इन लोगों ने यह पाया कि ''कोई भी उत्तर इतिहास के प्रति किसी तर्कसंगत दृष्टि की अपेक्षा निश्चित रूप से एक तरह के नारों के समान अधिक दिखेगा'' और यह कड़े शब्दों में कहा कि उन्हें इस तथ्य को उद्घाटित करने के लिए एक हजार शब्दों की आवश्यकता नहीं है।[8]

5. वही, पृ. 245
6. वही, पृ. 10-11
7. अमेरिकी विद्वान, विंटर 1998
8. वही, पृ. 103

बहस के शोर-शराबे को देखकर यह आश्चर्य लगता है कि इतिहास को सदा ही मानविकी का एक भाग माना गया है जो उन विषयों में से एक है जो हमें नारेबाजी से घृणा करने, जटिलता सहने और सूक्ष्म अंतरों को महत्व देने जैसी शिक्षा देता है । पिछली शताब्दी के बदलने से पहले वुडरो विल्सन और उनके नेतृत्व में बनी समिति के दस अन्य सदस्यों ने यह टिप्पणी की कि इतिहास, विशिष्ट कहानियों और ''अमूल्य मानसिक शक्ति, जिससे हम न्याय करते हैं'' के जरिये सर्वोच्च लक्ष्य-प्राप्ति का नाम मात्र नहीं है, बल्कि उससे परे जाता है ।[9] 'कैसा इतिहास' के प्रश्न पर हमने 'इतिहास पढ़े ही क्यों?' के अपेक्षाकृत मौलिक प्रश्न को ही भुला दिया है।

इस उपेक्षित प्रश्न का उत्तर स्वयं-सिद्ध नहीं है । अमेरिकी कभी भी पाठ्यक्रम में इतिहास के स्थान को लेकर पूर्ण विश्वस्त नहीं रहे हैं । इतिहास की शिक्षा क्षणिक उत्साह उत्पन्न कर सकती है किन्तु इसकी जड़ें गहरी नहीं हैं। कई राज्यों के पाठ्यक्रम में इतिहास के अध्ययन की बहुत कम जरूरत होती है और शिक्षा-शास्त्र के विद्यालयों में गणित के अध्यापन, विज्ञान के अध्यापन और साहित्य के अध्यापन के लिए भावी शिक्षकों को पाठ्यक्रम दिए जाते हैं किन्तु हमें पूरे देश में इतिहास के अध्यापन को केन्द्र में रखकर चलाये जाने वाले थोड़े से प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को भी ढूंढने में कठिनाई होती है। यह निश्चित है कि इतिहास राष्ट्रीय नीति संबंधी बहसों में प्रमुख ध्यान पा रहा है। किन्तु वह स्थान जो ज्यादा महत्वपूर्ण है वह है विद्यालय, जहां छोटे बच्चे पढ़ते हैं और महाविद्यालय, जहां शिक्षक पढ़ाए जाते हैं, वहां इतिहास की स्थिति कुछ भी हो, पर वह निश्चित हो ।

इस लेख में मेरा जोर इतिहास सीखने के उस तरीके से भिन्न है जो कि इस संदर्भ में हुए अब तक की राष्ट्रीय बहस का मुख्य सरोकार रहा है। मेरा ध्यान इस पर नहीं है कि कौन-सा इतिहास अच्छा है, विजेताओं का, या पराजितों का, या सुलेमानी संगठन का। इसकी जगह इतिहास के इस वर्तमान युद्ध से कई कदम पीछे जाकर मैं इन प्रश्नों पर विचार करना चाहूँगा कि इतिहास किस कारण अच्छा है ? इसे विद्यालयों में पढ़ाया ही क्यों जाए ? संक्षेप में, मेरा दावा है कि आंशिक रूप से सत्य माने जाने के बावजूद भी इतिहास विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल कुछ अन्य विषयों की तरह हमें सभ्य बनाने में सक्षम है । मैं अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने की मौलिकता का कोई दावा नहीं करता किन्तु मेरा विश्वास

9. पॉल गैगनॉन का लेख - हिस्ट्री रोल इन सिविक एजुकेशन : द प्रिकन्डिशन फॉर पोलिटिकल इंटिलिजेंस'', जो वालटर सी. पारकर द्वारा संपादित ''एजुकेटिंग द डेमोक्रेटिक माईन्ड' (अल्वानी ; स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूआर्क प्रेस) पुस्तक में है, के पृ. 243 से उद्धृत है ।

है कि प्रत्येक पीढ़ी को इसका स्वयं ही नये तरीके से उत्तर देना होगा कि अतीत का अध्ययन क्यों ज्यादा महत्वपूर्ण है और उसे स्वयं को याद दिलाना होगा कि आखिर क्यों और कैसे इतिहास हमें एक जगह ला सकता है, इसके बरक्स जैसा कि हाल ही में हमने देखा है, इसने हमें जुदा ही किया है ।

जो तर्क मैं यहां रख रहा हूं वह अतीत के साथ परिचय या मुठभेड़ में निहित तनाव पर निर्भर है । परिचित एवं अपरिचित के बीच का तनाव । जिन लोगों को हम समझना चाहते हैं उनसे निकट होने का अनुभव या दूर होने के अनुभव के बीच का तनाव । ये तनाव अतीत की समझ को लेकर दो विपरीत धुव्रों का निर्माण करते हैं । इनमें से कोई भी छोर इतिहास की जटिलता के साथ पूरी तरह न्याय नहीं करता है । अचानक हमारा इस तरफ या उस तरफ घूम जाना इतिहास के धारदार किनारों को भोंथरा करता है और साथ ही साथ हमें विकृत समझ और कुछ बिगड़ी हुई आकृतियों के साथ पीछे छोड़ जाता है । इसके अलावा मेरा यह दावा है कि एक परिपक्व इतिहासपरक विचार के सारतत्व को समझना ठीक-ठीक इस पर निर्भर करता है कि इतिहास के उन रास्तों को तय कर पाने की क्षमता हममें किस हद तक है जो परिचय के धुव्रों से अतीत की दूरी के बीच, अवरोधों से भरे भू-भाग से होकर जाते हैं ।

परिचय का ध्रुव ज्यादा शक्ति के साथ अपनी ओर खींचता है। परिचित अतीत हमें इस दावे के साथ प्रलोभन देता है कि हम अपनी स्थिति को समय की गति में निर्धारित कर सकते हैं और अपनी पहचान को 'वर्तमान' के साथ और मजबूती से बांध सकते हैं । अपनी कहानियों को उनसे जोड़ने से, जो हम लोगों से पहले गुजर गए, अतीत हमारे दैनिक जीवन का मुख्य स्रोत हो जाता है। एक न खत्म होने वाला कच्चे माल का भंडार जो हमारी वर्तमान जरूरत के लिए काम आता है। अपने आप को समय के साथ व्यवस्थित करना मानव की मुख्य जरूरत है । वस्तुत: बिना ऐसा किए दुनिया में अपने जीवन की कल्पना करना असंभव है।

परन्तु जब हम अतीत को एक ऐसे प्रयोग के लायक वस्तु के रूप में देखते हैं जो हमें बिना मध्यस्थता या रूपान्तरण के रूप में प्रकट करे, तब हम इसका अन्त इसे अपनी वर्तमान जरूरत के लिए एक उपभोग के सामान के रूप में परिवर्तित करके करते हैं। हम इतिहास के उस सुविस्तृत क्षेत्र को, जो हमारी वर्तमान जरूरत से मेल नहीं खाता या हम उससे संबंध बिठा पाने में असफल रहते हैं, तब उसे या तो अलग कर देते हैं या उससे आंखे फेर लेते हैं। नि: संदेह, अतीत में एक सम्मोहन होता है। परन्तु यह सम्मोहन पुराने और सस्ते मच्छी बाजार की तरह है जिसमें न खत्म होने वाली चमकीली और सस्ती लिफाफिया चीज की लरी लगी होती है। क्योंकि हम लोग काफी हद तक यह जानते हैं कि इस अतीत में जाने के लिए हम किस चीज को खोज रहे हैं। हमारी मुठभेड़ हमें परिवर्तित करे ऐसा नहीं होता, न ही यह इसका कारण बनती है कि हम फिर से सोचने को विवश हों कि 'हम लोग हैं कौन ?' अतीत हमारे हाथों में चिकनी मिट्टी की तरह हो जाता है । अतीत का विस्तार हम वहां तक नहीं करते जहां हम इससे कुछ सीख सकें। वस्तुत: हम लोग अतीत को इस प्रकार मरोड़ते हैं ताकि यह उस पूर्व निर्धारित अर्थ के साथ मेल करने लगे जिसे हम लोग पहले से ही सोच रहे होते हैं।

इस तनाव में दूसरा ध्रुव अतीत की विविधता है जो एक ऐसे विस्मय और आश्चर्य की संभावना को प्रस्तुत करता है जहां लोगों से, जगहों से तथा समयों से मिलना हमें इस पुनर्चिंतन के लिए प्रेरित करता है कि हम लोग अपने आप को एक मानव के रूप में कैसे देखते हैं। अतीत के साथ यह साक्षात्कार संवेदना की एक सीमा तक हमारे सोच को विस्तार दे सकता है । अगर अतिवाद की नजर से देखें तो इस सोच की अपनी कई समस्यायें हैं । जहां तक अतीत को समझने का सवाल है वह 'स्वयं की सीमा में' - वर्तमान की जरूरतों, उसके सरोकारों और परिवेश से अलग, प्राय: एक तरह के गोपनीय आकर्षण का परिणाम होता है । यह वह निष्कर्ष है जिस पर समकालीन इतिहास को बयान करने वाले साहित्य से गुजरकर कोई व्यक्ति पहुंचता है । इस विशिष्ट साहित्य का अधिकांश भाग पेशेवरों के एक छोटे समूह का ध्यान तो आकृष्ट कर सकता है किन्तु यह किसी दूसरे को आकर्षित करने में असफल ही रहता है।[10]

वह परिचित अतीत जो हमारे वर्तमान की जरूरतों के अनुकूल दिखता है और वह अतीत जिसकी उपयोगिता तुरन्त दिखाई नहीं देती, के बीच के तनाव को दूर करने का कोई सरल उपाय नहीं है। तनाव इसलिए है क्योंकि इतिहास के दोनों स्वरूप आवश्यक और अपरिवर्तनीय हैं। चूंकि हम उन लोगों से संबंध की जरूरत महसूस करते हैं जिनका हम अध्ययन करते हैं इसलिए यही वह कारण बनता है जो हमारी इच्छा को उनसे जोड़े रखता है तथा उनसे जुड़ा होने को महसूस कराता है। हम लोग अपने आप को परम्परा के उत्तराधिकारी के रूप में देखते हैं, जो हमें आधुनिक दुनिया की क्षणभंगुरता में एक मजबूत स्तम्भ और कुछ सुरक्षा प्रदान करती है।

परन्तु यह कहानी का सिर्फ आधा भाग है । इतिहास की मानवीय विशेषताओं को पूर्ण रूप से महसूस करने एवं इसकी महत्ता को समझने के लिए स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के कार्ल डेगलर के शब्दों को देख सकते हैं : ''अपनी बुद्धि-विवेक एवं सूझ-बूझ का विस्तार करें ताकि मानव होने का क्या अभिप्राय है - यह जान सकें।[11]'' हमें जरूरत है दूरवर्ती अतीत से मुठभेड़ की । एक ऐसा अतीत जो हमारे सोचने के तरीकों एवं सामाजिक संस्थाओं से वर्षों

10. देखें, थियोडोर एस. हैमरी की तीक्ष्ण प्रतिक्रिया - रिफ्लेक्शन्स ऑन हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स (मैडिसन : यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कानसिन प्रेस, 1987) में।
11. कॉर्ल एन. डेगलर, ''रिमेकिंग अमेरिकन हिस्ट्री, अमेरिकी इतिहास का एक जर्नल, वाल्यूम - 67, 1980 पृ. 24.

दूर हो। यह अतीत का एक ऐसा स्वरूप है जो शुरू में हमें दिग्भ्रमित कर देता है या उससे भी ज्यादा केवल ऊबाऊ बयान मात्र लगता है। जबकि सचमुच हमें जरूरत है यह जानने की कि हम लोग उससे परे हैं जैसा कि जन्म से ही हम पर एक लेबल लगा दिया जाता है। इस कम परिचित अतीत से सतत मुठभेड़ हमें इस ग्रह पर अल्पविराम की सीमाएं बताती है एवं पूरी मानव जाति में सदस्यता की अनुमति देती है। इस प्रकार हम यह विडम्बना देखते हैं कि अतीत का महत्व ठीक-ठीक उसी बात में है जो शुरू में इससे असंबद्ध दिखाई दे रही थी ।

मैं इन मुद्दों पर एक इतिहासकार की तरह नहीं जा रहा । न ही वैसे लोगों की तरह जो अपना समय उन दस्तावेजों के इस्तेमाल में खर्च करते हैं जो अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं । बल्कि एक मनोवैज्ञानिक की तरह जो अपने कार्य एवं साक्षात्कार की रूपरेखा तैयार करता है, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि हम कैसे जान सकें कि आज की तारीख में हम लोग कौन हैं ? साथ ही साथ मेरे आंकड़े प्राचीन अभिलेखों से नहीं प्राप्त हैं बल्कि यह वर्तमान में तैयार किये गये हैं । जब मैं ने हर क्षेत्र के लोगों से साक्षात्कार किया। जैसे, शिक्षकगण, काम कर रहे इतिहासकार, उच्च विद्यालय (हाई स्कूल) के छात्र और उनके माता-पिता । निम्न तीन इतिवृत्तों में मैं इस अनुसंधान कार्यक्रम की कुछ झलकियां प्रस्तुत करता हूं। इनमें पहला है - क्रान्तिकारी युद्ध के प्राथमिक दस्तावेजों के साथ हाई स्कूल के छात्रों की मुठभेड़। दूसरा है, बीतती हुई 19वीं सदी की मिडवाइफ की डायरी को पढ़ने के बाद प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापिका की प्रतिक्रिया। और तीसरा है, एक इतिहासकार की मुठभेड़, सामना उन दस्तावेजों से, जो रंगभेद को लेकर अब्राहम लिंकन की दृष्टि पर प्रकाश डालते हैं ।

इन शब्द चित्रों से मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि इतिहासपरक चिन्तन, अपने गहनतम स्वरूप में न तो प्राकृतिक क्रिया है और न ही कुछ ऐसा जो मानसिक विकास के साथ-साथ अपने आप प्रकट होता है । मैं यहां इसका तर्क दूंगा कि, इसकी उपलब्धियां वस्तुत: साधारण तौर पर हमारे सोचने की प्रकृति के विपरीत जाती हैं। यही कारण है कि अतीत के अर्थ को समझने के लिए बुनियादी मानसिक ढाँचे के बदलाव से ज्यादा आसान नाम, तारीख और कहानियां याद करना है । इस स्थिति में परिपक्व ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करना कठिन है, सिर्फ इस वजह से नहीं कि हम जिस दुनिया में रह रहे हैं वहां एम. टी. वी. और डिजनी हल्केपन का एक माहौल रच रहे हैं बल्कि इसलिए भी क्योंकि हम अतीत के द्वारा जो अन्य उद्देश्य साधना चाहते हैं वह ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती हैं ।

डेरेक के उदाहरण से शुरू करें तो, एक 17 वर्षीय बालक जो 'एडवांस्ड प्लेसमेंट हिस्ट्री कोर्स' का छात्र (बाद में अपने उच्च वर्ग का अभिवादक) था, जिसने मेरे शुरू के एक अध्ययन में भाग लिया। मुझे डेरेक स्पष्ट रूप से याद है क्योंकि यह वही था जिसकी वजह से मैंने यहां जिस प्रश्न की चर्चा की है वह पहली बार मेरी दृष्टि में आया।[12]

डेरेक ने उस अध्ययन में भाग लिया था जिसमें उच्च विद्यालय के छात्रों के साथ-साथ पेशेवर इतिहासकार भी थे, वे लेक्सिंगटन के युद्ध के प्राथमिक स्रोतों पर श्रेणीबद्ध चर्चा कर रहे थे। डेरेक ने जब लेक्सिंगटन ग्रीन को जाने वाले रास्ते में खड़े कुछ तुच्छ लोगों और ब्रिटिश सेनाओं के मुकाबले के बारे में पढ़ा तब उसने संग्रामों की असंगत संख्या पर टिप्पणी की । दस्तावेज कहता है कि सैंकड़ों ब्रिटिश सैनिकों ने 70 या कुछ ऐसे ही कॉलोनिस्टों का विरोध किया।[13] डेरेक ने युद्ध के बाद क्या हुआ पर ध्यान दिलाया। आठ कॉलोनिस्ट मरे पड़े थे जबकि ब्रिटिशों की तरफ से सिर्फ एक मृत्यु हुई थी । ब्रिटिशों की तरफ से कम संख्या में मृत्यु, युद्ध मात्र के तात्पर्य से ठीक उल्टा होना यह दर्शाता है कि शायद यह युद्ध एकतरफा हुआ होगा।

ये सब वही गहन अवलोकन थे जिसने डेरेक की गहरी बुद्धि को प्रतिबिंबित किया और जिसने उसे अपने साथियों के बीच अलग खड़ा कर दिया । तथापि जब उससे किसी एक तस्वीर को चुनने को पूछा गया जो उन लिखित दस्तावेजों को अच्छी तरह दर्शाए, जिनकी उसने समीक्षा की थी तो डेरेक ने वह तस्वीर नहीं चुनी जो कॉलोनिस्टों को अव्यवस्थित बताती हो। शायद यह उसके पहले के अवलोकन का तार्किक चुनाव रहा होगा। इसकी जगह उसने वह तस्वीर चुनी जिसने कॉलोनिस्टों को दीवार के पीछे छिपते दिखाया। बंदूकों को दुबारा भरते, और लालकोट पर निशाना लगाते दिखाया गया था। डेरेक ने उम्मीद की कि यही सबसे सही चित्रण था क्योंकि यह उन (तुच्छ) लोगों के ..... बढ़त की स्थिति में कमी ला देता था। इस तुलना में कि वे किसी प्रकार की पहाड़ी पर हों और मैं अनुमान लगा सकता हूं कि यहीं कहीं दीवार होगी। मैं अनुमान करता हूं कि ..... ये तुच्छ लोग बिखर रहे होंगे, खम्भे या किसी अन्य चीज के पीछे छिप रहे होंगे बजाए कि (ब्रिटिश सेना के) सामने खड़े होने के। ..... आप

12. देखें ''प्रोबिंग द डेप्थ्स ऑफ स्टूडेन्ट्स् हिस्टोरिकल नॉलेज'' सैम बाईनबर्ग, अमेरिकी इतिहास संघ के सूचना-पत्र, वाल्यूम -30, मार्च 1992 पृ. 20-24 के परिप्रेक्ष्य में ।

13. इस अध्ययन के मूल दस्तावेज और पूरे विवरण के लिए देखें, सैम्यूल एस. वाईनबर्ग का लेख -''हिस्टोरिकल प्राब्लम सोल्विंग: ए स्टडी ऑफ द कॉगनिटिव प्रोसेसेज यूज्ड इन द इवेल्यूएशन ऑफ डॉक्यूमेंट्री एण्ड पिक्टोरियल इविडेंस'' - जो ''जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी'' (वाल्यूम -83, 1991, पृ. 73-87) में प्रकाशित है ।

जानते हैं, यह जगह जरूर कुछ-कुछ पहाड़ी की तरह रही होगी। वे सोच रहे होंगे कि उन्हें किसी चीज के पीछे छिपना होगा। कोई ऐसी जगह पा लें जहां वे मारे न जा सकें। जबकि वे एक निचले भू-भाग पर होंगे और मरने को तैयार होंगे । उनकी मन: स्थिति हास्यास्पद रही होगी यदि वे इसी तरह खड़े रहे, जैसे यहां (तस्वीर में 'तुच्छ लोगों' को अव्यवस्थित दिखाया जा रहा है) । वे मरने को तैयार हैं ।[14]

हम छात्रों से इतिहास की कक्षा में क्या उम्मीद करते हैं इसका परंपरागत परिभाषाओं से निर्णय करें तो डेरेक का अध्ययन अनुकरणीय है । ब्रेडले आयोग, वह प्रारूप जिसने इतिहास की शिक्षा में वर्तमान सुधार आन्दोलन प्रारंभ किया, के शब्दों में छात्रों को चाहिए कि ''वे नाटक की एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करें जो (उनके) समाप्त होते जाने के ज्ञान को मुअत्तल करे ताकि उन्हें एक नये युग की अनुभूति हो सके। दूसरे युग की अनुभूति पाने के लिए ऐसी परानुभूति का ज्ञान जो कि छात्रों को उनकी आंखों से देखने की अनुमति दे, जो वहां थे'' ।[15] डेरेक ने न सिर्फ दूसरे की आँखों से देखने की कोशिश की, साथ ही साथ उनकी विश्वदृष्टि और उनकी 'प्रवृत्तियों' के पुनर्निर्माण की भी कोशिश की । यद्यपि डेरेक की यह पुनर्रचना तभी सही रहेगी जब ये लोग उसकी अपनी (डेरेक के) युद्ध-भूमि के प्रकृति की आधुनिक धारणा में भागीदार होते - जहां कि एक प्रकार के गुरिल्ला युद्ध में आप अपने एक मजबूत विरोधी को दीवार के पीछे छुपा हुआ दिखाते हैं । डेरेक का यह अवलोकन एक प्रकार के विडम्बनापूर्ण और षडयंत्रकारी संबंधों को सामने रखता है । ऐसा प्रतीत होता है कि इस मामले में उसका नजरिया सामान्य व्यक्तियों की व्यवहार संबंधी कुछ परिकल्पनाओं पर आधारित है। ये परिकल्पनाएं वापस, उसके खुद के अवलोकन, जो कि लिखित साक्ष्य की समीक्षा के दौरान बने थे, को ढँक लेती हैं । आश्चर्यजनक तौर पर हम पाते हैं कि जिसे डेरेक ने बड़े प्राकृतिक ढंग से ग्रहण किया उसी को प्युरिटनों ने बड़े पाश्विक ढंग से अपनाया, जब वे इस तरह की लड़ाई का पहली बार सामना कर रहे थे ।

16वीं शताब्दी तक यूरोपीय युद्ध विधा, सज्जनता की लड़ाई से बदलकर काफी जटिल रूप में विकसित हो गयी थी। लड़ाकुओं के लिए यह आसान नहीं था कि वे दिन में युद्ध करें तथा रात में साथ-साथ भोजन । रणभूमि में युद्ध ने एक विस्तृत शिष्टाचार का परिचय दिया, अंशत: एक लम्बे, भारी और बोझिल काम के परिणाम स्वरूप - 42 विभिन्न चरणों तक- जिसमें बंदूक को पुन: भरना और गोलीबारी इत्यादि भी शामिल थे ।[16]

न्यू इंग्लैण्ड के समुद्री तटों पर बड़े पैमाने पर युद्ध जैसी लड़ाइयों की संस्कृति वहां के मूलवासियों के बीच उनके अपने युद्ध की परम्परा से टकराती थी। मसलन पीकोटों के बीच सांकेतिक हरकतों की सैनिक संस्कृति हावी थी। आमने-सामने की वैसी लड़ाई के नियम नहीं थे जिसके परिणामस्वरूप भारी मात्रा में खूनखराबा हो सकता था अपितु छोटे पैमाने पर छापामार युद्ध जो सांकेतिक योगदान को बताते हों । परंपरा की यह टकराहट अन्ततः बर्बादी की ओर ले जाती थी। क्योंकि ऐसा तब हुआ भी जब प्यूरिटनों ने 1637 में मिस्टिक नदी के किनारे बसे इंडियन गाँव को घेर लिया और पूरी तरह जलाकर समतल बना दिया । सोलेमान स्टोडार्ड ने 1703 में जोसेफ डुडले को लिखते हुए कहा:

यदि इंडियन वैसे होते जैसे और लोग हैं तथा उन्होंने दूसरे देशों की तरह अपने आक्रांताओं को सामान्यत: काबू में किया होता, तब ऐसा लगता कि आक्रांताओं की अमानवीयता क्रिश्चयन व्यवहारों के विपरीत थी। लेकिन वे उनके पास एक चोर और खूनी की तरह लग रहे थे.. उन्होंने खुले मैदान में आकर युद्ध का एलान नहीं किया, उन्होंने उनके साथ काफी क्रूरता बरती जो उनके हाथ आ गये .... वे भेड़ियों की तरह व्यवहार कर रहे थे और उनके साथ भेड़ियों की तरह ही व्यवहार किया जाना चाहिए ।[17]

ऐसा नहीं था कि डेरेक लापरवाह पाठक था । इसके विपरीत उसके अवलोकन में प्रवाह था और उसमें बौद्धिक क्षमता का प्रबन्धन भी था (जिसे मनोवैज्ञानिक बौद्धिकता कहते हैं) । परन्तु जब सब कुछ कह और कर दिया गया, डेरेक का 18वीं सदी के दस्तावेजों से सामना हुआ जो उसे अचंभित न कर सका । यहां तक कि कॉलोनिस्ट का व्यवहार भी उसे पीछे लौटने को मजबूर न कर सका तथा उसने कहा - ''वाह, अजीब लोगों का समूह है । धरती पर ऐसा क्या होगा जो उन्हें इस तरह व्यवहार करने को प्रेरित करता होगा ।'' शायद ऐसी ही कोई प्रतिक्रिया उसे व्यवहार की नीति, कर्म, सम्मान और किसी उद्देश्य के लिए मर जाने पर ध्यान से सोचने के लिए प्रेरित करती । उसकी दुनिया के लिए यह सब अपरिचित था । इन दस्तावेजों ने डेरेक को अपने आप से नए प्रश्न पूछने या मानव के अनुभवों के नए आयाम को समझने के लिए प्रेरित नहीं किया । इसके विपरीत उसके विद्यमान विश्वासों ने उन

14. वही. पृ. - 79

15. विद्यालयों में इतिहास पर ब्रेडले आयोग, इतिहास का पाठ्यक्रम बनाने के लिए : विद्यालयों में इतिहास अध्यापन के लिए निर्देशिका (वाशिंगटन, डी.सी.: एजुकेशलन एक्सेलेन्स नेटवर्क, 1988) पृ. 14.

16. एडम हॅर्श, ''कोलिश्जन ऑफ मिलिट्री कल्चर्स इन सेवेन्टिंथ सेन्चुरी न्यू इंग्लैंड'' जर्नल ऑफ अमेरिकन हिस्ट्री, वाल्यूम 74,1988,पृ. 1187-1212

17. डूडले को स्टोडर्ड, 22 अक्टूबर 1703, हॅर्श द्वारा उद्धृत,पृ. 1208

सूचनाओं का ढाँचा ही बदल दिया, जिनका उसने सामना किया था ताकि वे नये रूप के अनुकूल हो जिसे कि ये लोग पहले से जान रहे थे । डेरेक ने इन दस्तावेजों को पढ़ा लेकिन उसने इनसे बहुत कम सीखा।

डेरेक के कथन ने कई प्रश्नों को जन्म दिया जो कि इतिहासपरक समझ रखने वालों के दिलो दिमाग में मौजूद रहते हैं। किस प्रकार से हम एक स्थापित विश्वास की प्रकृति जान सकते हैं; अतीत के लोगों के विचार को समझने के लिए, जो हम जानते हैं उसे कैसे ठीक तरीके से रखें, यह कोई आसान काम नहीं है। हमारे भीतर यह धारणा होती है कि हम जो जानते हैं उससे अलग हो सकते हैं या यह कि हम जब कुछ शब्दों को पढ़ते हैं तो उनसे अपने जुड़ाव के प्रसार को रोक सकते हैं, याद करें एलन मैगिल का ''भाष्यविज्ञान-अकृत्रिमता'' या ''त्रुटिहीन धारणा'' का विश्वास।[18] इस स्थिति के चलते जो अपरिहार्य समस्या है उसे लेकर दार्शनिकों में हन्स-जार्ज गॉडमर सबसे ज्यादा शिक्षाप्रद है। गॉडमर ने पूछा हम विचार की एक स्थापित दशा से पार कैसे पायें, और वो भी तब जबकि ऐसी दशा हो जो पहले की जगह ये ही समझने की इजाजत देती हो ?[19] हम उन लोगों से किसी तरह कम नहीं जिनका कि हम अध्ययन करते हैं और जो ऐतिहासिक व्यक्ति हैं । वास्तविक अतीत की झलकी देखने की कोशिश नंगीं आंखों से सूक्ष्म जीवाणुओं को देखना है : ''वह यंत्र जिसका हम परित्याग करते हैं यही वह है जो हमें देखने लायक बनाता है ।''

यह वैचारिक पक्ष उस क्लासिक इतिहास की दृष्टि से बहुत अलग है जो हम आर. जी. कॉलिंगवुड एवं अन्य में पाते हैं । कॉलिंगवुड के लिए ''सभी इतिहास विचार के इतिहास हैं'', एक इतिहासकार की क्षमता जो उसे जूलियस सीजर के मस्तिष्क में पहुंचा देती है, ''वह परिस्थिति जिसमें सीजर था, वैसा ही सोचना जो सीजर ने उस परिस्थिति के विषय में एवं उससे निपटने के संभावित रास्तों के बारे में सोचा था ।''[20] कॉलिंगवुड को यह विश्वास था कि हम 'सीजर को जान' सकते हैं क्योंकि मनुष्य के सोचने का ढंग मूलत: देश-काल की सीमा को लांघ जाता है ।

लेकिन समकालीन इतिहासकार के शब्दों में इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं । इटली के प्रमुख इतिहासकार एवं *'दी चीज एण्ड द वार्म्स'* के लेखक कार्लो जिंजबर्ग के शब्दों पर गौर करें; एक इतिहासकार का कार्य उससे बिल्कुल विपरीत है जो हममें से अधिकांश लोगों को विश्वास करने के लिए बताया गया था । उसे अतीत के लोगों के साथ हमारे मिथ्या जुड़ाव की भावना को खंडित करना चाहिए क्योंकि वे ऐसे समाज के हिस्से रहे हैं जो हमारे समाज से बहुत अलग हैं। जितना हम इनके मस्तिष्क के ब्रह्मांड में गोते लगाएंगे उतना ही उस सांस्कृतिक दु:ख से सकते में आ जाएंगे जो हमें उनसे अलग करता है।[21]

'द ग्रेट कैट मैसॅकर' के पुरस्कार विजेता लेखक राबर्ट डॉर्नटन के शब्दों पर विचार करें : अन्य लोग अन्य हैं । वे वैसा नहीं सोचते जैसा हम । और यदि हम उनके सोचने के तरीके को समझना चाहते हैं तो हमें इस 'अन्यता' को पकड़ने पर विचार करना चाहिए ..... अतीत के साथ हमारे लगाव की मिथ्या भावना पर लगातार प्रहार आवश्यक है । हमें लगातार यह सांस्कृतिक सदमा मिलना चाहिए ।''[22]

या पश्चिमी इतिहासकार रिचर्ड ह्वाइट के शब्दों में : ''कोई अच्छा इतिहास अपरिचितता में ही आरंभ होता है। अतीत को आरादायक नहीं होना चाहिए । अतीत को वर्तमान की सुपरिचित प्रतिध्वनि नहीं होना चाहिए। क्योंकि यदि यह सुपरिचित है तो उसका पुनर्निर्माण क्यों ? अतीत को इतना अपरिचित होना चाहिए कि आप आश्चर्य करें कि कैसे आप और वे लोग जिन्हें आप जानते हैं एवं प्यार करते हैं, ऐसे काल से संबद्ध रहे हैं ।''[23]

इस बात को समझने के क्रम में कि किस प्रकार हम सीजर से अलग हैं क्या हम कभी उसे उस प्रकार ''जान'' सकते हैं जैसा कि वह स्वयं के बारे में जानता था या उसके समकालीन उसके बारे में जानते थे । संभव है कि हम इसकी संभावना से ही संतुष्ट हो जायें मगर हम किसी जादू जैसी चीज के बगैर कैसे माने कि हम सफल रहे । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि इन समकालीन इतिहासकारों द्वारा रखी गयी बात इससे पहले के इस जिक्र से विपरीत है कि इतिहासपरक समझ का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम उनकी

18. एलन मेजिल, ''रिकाउंटिंग द पास्ट : 'डिस्क्रिप्शन एक्सप्लानेशन एण्ड, नैरेटिव इन हिस्टोरियोग्राफी'',-अमेरिकन हिस्टोरिकल रिव्यू,जून 1989, पृ. 632.

19. देखें, ''द प्राब्लम ऑफ हिस्टोरिकल कन्सेन्सस् '' - हेन्स - जॉर्ज गॉडमर का लेख जो पॉल रेनबो और विलियम एम. सुलिवन द्वारा संपादित - ''इन्टरप्रिटेटिव सोशल साइन्स (वर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1979) में प्रकाशित है ।

20. आर. जी. कॉलिनवुड, ''द आइडिया ऑफ हिस्ट्री'' (न्यूआर्क: ऑक्सफोर्ड, 1946), पृ. 215

21. जोनाथन कंडेल, ''क्या यह दुनिया पनीर के कारण बनी है? कार्लो जिंजवर्ग इस प्रश्न से मंत्रमुग्ध था जबकि अन्य सभी ने इसकी उपेक्षा की'', न्यूऑर्क टाइम्स पत्रिका, 17 नवम्बर, 1991 पृष्ठ 47.

22. रॉबर्ट डॉर्नटोन, ''द ग्रेट कैट मैसेकर'' (न्यूऑर्क : विन्टेज, 1985), पृष्ठ 4.

23. अहॉनग्रान को याद करता हुआ रिचर्ड ह्वाइट : परिवार के अतीत की कहानी सुनाता हुआ (न्यूऑर्क : हिल एण्ड वैंग, 1998) पृ. 13

आंखों से देखें जो उस समय वहां थे । अगर जिंजवर्ग तथा अन्य सही हैं तो इतिहास परक अध्ययन का उद्देश्य यह शिक्षा होनी चाहिए कि हम क्या नहीं देख सकते है ताकि हम अपनी समझ की संदिग्धता से परिचित हो सकें ।

इस धारणा को भी चुनौती मिली कि ऐतिहासिक ज्ञान, वर्तमान समस्याओं पर विचार करने के लिए उदाहरणों के बैंक का काम करेगा । इतिहास के दार्शनिक लुईस मींक मानते हैं कि जितना ज्यादा हम अतीत से परिचित हो रहे हैं उतनी ही ज्यादा सावधानी की जरूरत किसी तार्किक क्रम को गढ़ने में होती है । मींक के मतानुसार ऐतिहासिक ज्ञान अगर कई बार हमें अतीत से जोड़ता है तो कई बार उन लोगों से हमें अलग भी करता है जिनका कि हम अध्ययन कर रहे होते हैं । मसलन जॉन लॉक, सरकार और मानव-प्रेरणा की अपनी ''आधुनिक समझ'' को लेकर हमारे समकालीन नहीं दिखते । और लॉक से अपने अलगाव, की जानकारी हमें इस बात के लिए प्रेरित करती है कि हम दो विपरीत बातों को छुपा जायें : *सैकेन्ड ट्रटीज* पर उनसे बौद्धिक निकटता और *ऐसेज ऑन द रिजम्बलेन्स ऑफ क्रिश्चानिटी* पर उनसे अलगाव लॉक को पढ़ते समय वे कहीं हमारे बिम्ब में फिट बैठ जाते हैं तो कहीं वह एक जटिल उलझाव पैदा करते हैं । 'नये लॉक' पर मींक कहते हैं कि ''वे अपने अजनबीपन और दूरी के बावजूद पहुंच के भीतर दिखते हैं । यह ठीक-ठीक उनकी ऐसी सनक है जो उनके मतों को लेकर हमारी समझ को बदल देती है जबकि यह उन राजनीतिक और दार्शनिक बहसों के सभी भ्रमों को तोड़ती है जो लॉक को समकालीन समझते हुए किये जाते हैं ।[24]

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है जब हम मिस्र के चित्रों और बीते हुए कल के परिप्रेक्ष्य से संबंधित रेखाचित्रों के विषय में सोचते हैं तो हम यह नहीं कह सकते कि ''मिस्रवासियों की देखने की दृष्टि हमारे जैसी ही थी लेकिन वे हमारे जैसा चित्र नहीं बना सकते थे ।''[25] यहां हमें इस संभावना पर विचार करना चाहिए कि उन्होंने दूसरे प्रकार से चित्र बनाये क्योंकि चित्रों को उन्होंने दूसरी तरह से देखा और इस तरह से देखने का उनका यह तरीका कुछ खास है जो अब दुर्लभ है । चाहे हम जितनी भी कोशिश कर लें हम अपने और सीजर के मस्तिष्क के बीच के अन्तराल को पाट नहीं सकते। चाहे हम जितने इच्छुक हों, क्या हम इस विचार को दबा सकते हैं ? मानवीय अनुभवों के प्रवाह में क्यों आखिरी महीना अपरिचित हो जाता है और आखिरी साल बहुत दूर ? जब हम अतिरेक में अभिव्यक्ति करते हैं तो यह सोचने का परिणाम कि अतीत के साथ कोई भी जुड़ाव नहीं होता, यह उतना ही गंभीर है जितना कि हमारा यह सोचना कि अतीत वर्तमान का साक्षात दर्पण है । डेविड लॉऐन्थल हमें यह याद दिलाते हैं कि अतीत एक वैदेशिक क्षेत्र है ।[26] एक वैदेशिक देश, एक वैदेशिक ग्रह नहीं । सहज ऐतिहासिकता को जड़ असम्बद्धता की भावना से बदल देना ख्याली स्तर पर *म्युजिकल चेयर* खेलने के समान है जहां हम एक लघुतावाद दूसरे को पकड़ने के लिए छोड़ते हैं ।

ऐतिहासिक वैचारिक प्रक्रिया दो विरोधी स्थितियों में सामंजस्य के लिए आह्वान करती है । पहला, हमारे सोचने के स्थापित तरीके एक विरासत के रूप में हैं जिन्हें खारिज नहीं किया जा सकता है। दूसरा, लेकिन यदि हम उन्हें उतार फेंकने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करते तो हम दिमाग को जड़ करने वाली इस स्वीकृति के लिए अभिशप्त हैं जो अतीत के ऊपर वर्तमान को गढ़ती है । मूलत: यही अन्तर्विरोध मुझे लॉरेल थैचर अलरीच की रचना *'ए मिडवाइफ्स टेल'* के करीब खींच लाया जो 1735 से 1812 के बीच जीवनयापन करने वाली मिडवाइफ (धात्री) मारथा वालार्ड की कहानी कहती है। जैसा कि कार्ल डेगलर ने इस किताब की समीक्षा में लिखा है - अलरीच की यह पुस्तक एक ऐसे समुदाय के आकर्षक जीवन को हमारे समक्ष खोलती है जो विदेशी है, फिर भी हमारे कितना करीब है ।[27]

जब मैं इस किताब को पढ़ रहा था तो मिन्नेसोटा में मुझसे कुछ शिक्षाविदों ने 'जानने के एक तरीके' के रूप में इतिहास पर एक वर्कशॉप (कार्यशाला) विकसित करने को कहा, कुछ ऐसा जो नाम और तिथि के परे हो जैसा कि अमूमन राज्य की 'परिणाम आधारित शिक्षा' व्यवस्था में नहीं दिखता है।[28] कार्यशाला के दो दिनों में मैंने दो तरीकों, अलरीच सरीखे लोगों की किताबों से इतिहास की समझ एवं इतिहास की पाठ्यपुस्तक से इतिहास को जानने के तरीके, जिससे प्रतियोगियों में अधिकांश सबसे अधिक परिचित थे, के बीच तुलना की ।

इतिहास की समझ बनाने के माध्यम के रूप में पाठ्यपुस्तक कठिन चुनौतियों को प्रस्तुत करती हैं और अपनी कुछ विशेष समस्याओं को भी जन्म देती हैं। पाठ्यपुस्तक उन चीजों के इर्दगिर्द केन्द्रित होती हैं जिसे रोनाल्ड मवार्थेस ने 'संदर्भित भ्रम' कहा है,

24. लुइस ओ. मिंक, ''हिस्टोरिकल अंडरस्टैंडिंग

25. वही

26. डेविड लॉएन्थल ''द पास्ट इज ए फॉरेन कन्ट्री'' (कैंब्रिज : कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985)

27. यह उद्धरण लॉरेल थैचर अलरीच के ''ए मिडवाइफ टेल' (न्यूयॉर्क, विन्टेज, 1991) के आवरण पर प्रकाशित हुआ है ।

28. यह कार्यशाला रैन्डी शैन्कट के दिमाग की उपज थी तथा मिशीगन स्टेट युनिवर्सिटी के कैथी रोम द्वारा साझे तौर पर गठित की गई ।

एक ऐसा विचार है जो यह मानता है कि चीजों को जैसा बताया गया है वे वैसी ही हैं जैसी वे पूर्व में थीं ।[29] इस भ्रम तक पहुंचने में ये किताबें (पाठ्यपुस्तकें) बहुत सी शैलीगत परंपराओं का इस्तेमाल करती हैं । पहला, ये (पाठ्यपुस्तकें) महाव्याख्यान (मेटानॅरेटीव) को उखाड़ फेंकती हैं या किताबों में ऐसे स्थल खूब होते हैं जहां लेखक कुछ निर्णय, बलाघात या अनिश्चितता को घुसेड़ देता है। महाव्याख्यान उस लेखन में सामान्य हैं जिसकी रचना इतिहासकार एक दूसरे के लिए करते हैं लेकिन स्कूली बच्चों के लिए किए गए उनके लेखन से इन्हें निकाल दिया जाता है ।[30] दूसरा, पाठ्यपुस्तक सामने आईं कैसे, इसके प्रमाण या तो छिपाये जाते हैं या मिटा दिये जाते हैं । ये पाठ्यपुस्तक जो कभी कभार ही वृत्तचित्र गत रिकार्ड को दर्शाती हैं और यदि प्राथमिक स्रोत कहीं दिखता भी है तो वह किनारे दिये गये निर्देशों के ही अनुरूप होता है ताकि मुख्य विषय में कोई घालमेल न हो । अन्तत: पाठ्यपुस्तकें सर्वव्यापी अन्य पुरूषों के रूप में ही बोलती हैं । वहां कोई दृश्यमान लेखक नहीं है जो पाठक का सामना करता हो वरन एक सामूहिक लेखक होता है जो अनुभवातीत स्थिति से बात करता है, एक ऐसी स्थिति से जो कि ज्ञान की अतीतावस्था है ।

मैंने अपने मिनोस्सेटा सेमिनार का आरंभ विन्थ्राफ जॉर्डन के लोकप्रिय 11वीं ग्रेड के (लिए) अमेरिकी इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'द अमेरिकन्स' के संकलन से किया जिसमें 22 सहभागियों ने भाग लिया।[31] औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति की विवेचना करते हुए, जो कि प्राय: उसी काल की है जिस काल की मार्था वालार्ड की डायरी है, जार्डन त्रिपक्षीय व्यापार पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, वेस्टइंडिज और अफ्रीकी उपनिवेशों के बीच के जरीये जो दास, ईख और रम के विनिमय पर आधारित था। यह कहानी एक बड़े से शीर्षक *'द नार्थ डेवलप्स कामर्स एण्ड सिटिज-मोलैसिज रमबुलियन"* के अन्तर्गत लिखित है, जिस कहानी में महिलाएं केवल *''फैमिली फार्म्स''* भाग के अन्तर्गत ही उपस्थित दिखाई देती हैं । आर्थिक जीवन में महिलाओं की भूमिका से संबंधित अनुच्छेद कार्यशाला में अगले दो दिनों के लिए हमारा 'मूल पाठ' बना। वह कसौटी जिस पर हमने अपनी बढ़ती हुई समझ और मूल पाठ को निबंधित किया, उसके पुनर्लेखन का हमने इस कार्यशाला के अंतिम घंटों में प्रयास किया ।

जिस किसी ने भी फैमिली फार्म में जीवन व्यतीत किया है वह जानता है कि ऐसी जिंदगी सबों के लिए अधिक समय और कठिन परिश्रम की मांग करती है। बच्चे उस उम्र से ही अंशकालिक काम करते हैं, जब उन्हें बताया जा सके कि मटर के छिलके कैसे उतारे जायें और मक्के के दाने कैसे साफ किये जायें तथा जलाने के लिए लकड़ियां कैसे लाई जायें । महिलायें कभी न खत्म होने वाले कार्यों में लगी रहती हैं। वे धातु के बर्तनों में खुले आकाश के नीचे जलने वाली आग के ऊपर खाना बनाती थीं । वे चिमनी के एक खाली कक्ष में कुछ सेंकती थीं जो कि चूल्हे (ओवेन) का कार्य करता था । वे खुरदरे कपड़े बुनतीं थीं और उनसे परिवार के लिए परिधान तैयार करती थीं। वे स्व निर्मित साबुन से कपड़ों और बिस्तरे को लकड़ी के कठौत में धोती थीं ।[32]

इस परिच्छेद और इससे संबंधित व्याख्यानों की परीक्षा करने के बाद हम अलरीच की किताब की ओर मुड़ते हैं । ऐतिहासिक विचार का अन्वेषण करने वाले एक पाठ के रूप में यह रचना बहुत से प्रवेश बिन्दुओं को हमारे सम्मुख उपस्थित करती है। प्रत्येक अध्याय का आरंभ होता है मार्था की डायरी के अनगिनत पन्नों के साथ, जिसमें 18वीं सदी की वर्तनी और व्याकरण की परंपराओं को वैसा ही रख छोड़ा गया है । पाठकों को उसके द्वारा प्रमाणों के आकलन से परिचित कराने के बाद ही अलरीच मुख्य विषय और संबंधित धाराओं की खोज में आगे बढ़ती हैं जो मार्था के जीवन से ही निकलती है। डायरी के निम्नलिखित उद्धरण (18वीं सदी की अंग्रेजी में लिखी) उस तरह की भावना को व्यक्त करते हैं जिसका अध्ययन प्रतिभागियों ने किया : (*नवम्बर 5,6 ऐट. पॉरकर - मीसेस हीलडमैने हीयर. क्लाऊदी एण्ड कोल्ड मीसेस होल्ड मैन हीयर टु हैव ऐ गाऊन मेड' मीसेस बेनजानित टु हैव ए क्लोक कट पॉली रस्ट ऑफ्टर वर्क आई वाज कॉल्ड टू मिस्टर पॉरकर आफ्टर्न मिस्टर बलार्ड इज बेटर 17 एफ एट डाइटोसएण्ड मिस्टर पूर्स. बर्थ 47थ अ डाटर ..... आई वाज काल्ड टु कैप्ट मेलॉय एट 11 आवर इवीनिंग, ऐन्ड वर्थ मी. पुर्स डाटर*[33])

ये उद्धरण हमारी खोज का एक भाग थे । हम लोगों ने अलरीच द्वारा मार्था की डायरी से संकलित प्रसव के आंकड़े की सारणी की भी परीक्षा की और इसकी तुलना हमने डॉ. जेम्स

29. रोनाल्ड बार्थस का लेख ''हिस्टोरिकल डिस्कोर्स'' जो माइकल लेन द्वारा संपादित - ''इंट्रोडक्शन टू स्ट्रॅक्चलिज्म'' (न्यू ऑर्क : बेसिक बुक्स, 1970) पृ. 145-55 में प्रकाशित है ।

30. एवन क्रिसमोर ''द रेटॅरिक ऑफ टेक्स्टबुक्स : मेटाडिस्कोर्स'' जर्नल ऑफ कैरिकुलम स्टडीज, जुलाई/सितम्बर 1984 पृ0 279-96 और देखें - रिचर्ड पैक़स्अन, ''सम वन विद लाइक ए लाइफ रोट इट : द इफेक्टस ऑफ ए विजिवल ऑथर ऑन हाई स्कूल हिस्ट्री स्टुडेन्ट्स'', जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, वाल्यूम - 89, 1997, पृ. 235-50.

31. दी अमेरिकन्स : द हिस्ट्री ऑफ ए पिपुल एण्ड ए नेशन'' (न्यूऑर्क : मैकडोगल लिट्टिल, 1985) - यह पुस्तक विनथॉर्प जॉर्डन द्वारा (जो कि मुख्य इतिहासकार हैं) अपने दो सहयोगियों मिरियम ग्रीनब्लाट और जॉन एस. बॉएस, के साथ सम्मिलित रूप से लिखी गई है ।

32. वही, पृ. 68.

33. अलरीच, पृ. 163

फारींगटन (1824-59) की सांख्यिकी से की जो मार्था से एक पीढ़ी बाद पैदा हुए थे । ऐसे समय में जब प्रसूति विद्या अनुमोदित नहीं रह गई थी और चिकित्सक प्रसूति के दौरान अफीम से व्युत्पन्न अफीम-निर्यास आदि का प्रयोग करने लगे थे ।[34] शल्य चिकित्सा के दौरान चिकित्सकों के पास मार्था के खड़े होने एवं इसके 20 साल बाद ही एक हार्वर्ड प्रोफेसर की लेखनी से हम सब आश्चर्यचकित थे कि धात्रियों की स्थिति में 18वीं सदी के अन्तिम वर्षों और उसके बाद कितना नाटकीय परिवर्तन आया। इस प्रोफेसर ने लिखा कि हम लोग चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को वैसा निर्देश नहीं दे सकते जैसा कि पुरूषों को । हम उन्हें चीर-फाड़ (शल्य कक्ष) के कमरों में नहीं ले जा सकते .... बिना उसके चरित्र के उन नैतिक गुणों को विनष्ट किये हुए जो कि एक धात्री एवं औरत के लिए आवश्यक हैं ।[35]

हमारी दिलचस्पी पाठ्यपुस्तक में दिए गए विवरणों के सुधार एवं विस्तार से ज्यादा कभी कभार विमर्श का केन्द्र होने वाली इस बात में थी कि इन पाठ्यपुस्तकों का लेखन किन चीजों से निर्दिष्ट होता है । हमारी इस पूर्व धारणा ने तब राहत की सांस ली जब हमने पाठ को अलरीच के विवरण के साथ युक्त किया । लॉरेल थैचर अलरीच जिन कहानियों को कहती हैं उनमें वह उपस्थित हैं । इनमें वे यह दिखाती हैं कि कैसे उसने बहुत धुंधले संदर्भों में से औपनिवेशिक न्यू इंग्लैंड के जटिल सामाजिक संबंधों को एक साथ संजोया है । कैसे उसने परंपरागत सुधारों से संबंधित गूढ़ संकेतों को खोलने के लिए औषधि की दुनिया में अपने को तल्लीन किया । कैसे मार्था के प्रति एफ्रैम के कामों को समझने के लिए उसे 18 वीं और 19वीं सदी के आरा मशीनों के कामों के बारे में जानना पड़ा ।

जब हम मार्था की दुनिया और उसके काम में गहरे तौर पर प्रविष्ट हुए तब हम उस इतिहासविद की दुनिया और उसके कार्यों के विषय में विचार करने से अपने को रोक न सके । किताब कब खत्म होगी, इस प्रश्न के बार-बार होने पर भी लेखक के दृढ़-निश्चय ने हमें झकझोरा ।[36] हमारे लिए लॉरेल थैचर अलरीच को जाने बिना मार्था वालार्ड को जानना असंभव प्रतीत हुआ । हमें इस बात से सहायता प्राप्त हुई कि इतिहासकार ने छिपाने का कोई यत्न नहीं किया है । वस्तुत: अलरीच ने बेबाक रूप से अपने आप को इस पाठ में उपस्थित किया है । उदाहरण के रूप में जब वह इसका विश्लेषण करती है कि अन्य इतिहासकारों ने मार्था की डायरी को तुच्छ एवं महत्वहीन पाया । पिछली सदी में लिखने वाले पुरूष लेखकों से इस प्रकार के विचार की अपेक्षा की जा सकती है लेकिन जब 1970 में रचित स्त्रीवादी इतिहास ने भी इस डायरी को तुच्छ पाया तो अलरीच के लिए यह कुछ ज्यादा ही गंभीर था ।

मार्था वालार्ड की किताब का जो वास्तविक सत्य है, वह है इसकी निरन्तरता, व्यापकता और गतिशीलता । ठंड के दिनों की परवाह न करते हुए नदी की धार को पार करने के इस काम ने इसके संग्रहण को आधार दिया । पतझड़ों (वहां के लिए एक निहायत तकलीफ देह मौसम) की लंबी अवधि का ध्यान किए बगैर जन्म के नियमित दस्तावेजीकरण, जिसने उसके शरीर के मांस को गला दिया, का गंभीर, स्थिर, सुन्दर और साहसिक काम पूरा हो जाता है । जब मार्था ने ट्रिबिया से अभिभूत या अनुप्राणित अनुभव किया तो इतिहासकारों ने इसे खारिज कर दिया । मार्था ने इसे न तो प्यूरिटन के आत्म परीक्षण विधि जैसा कहा, न ही भावुकतावादियों के आत्मज्ञान की तरह, बल्कि सीधे-साधे तरीके से कहा और सच्चाई भी यही है । और अन्त में अविस्मरणीय बातें है । उन्होंने सत्ताईस साल से अधिक ठीक 9965 दिनों तक रिकार्ड रखा ....। और यह वर्ष उसके पास आने वाला है । उसने 31 दिसम्बर 1800 को लिखा था और यदि हमने सही तरक्की की है तो यह खुशी की बात है । उसके लिए जीवन का मूल्यांकन कार्य से था, कुछ भी बेकार नहीं था ।[37]

यह छोटा उद्धरण पिछले 30 वर्षों में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों का साक्षी है ।[38] इतिहासपरक कथ्यों की पहुंच को शासनकला के महान कार्यों तक ही रोका गया किन्तु अब यह प्रसव के दैनिक कार्यों और जनसामान्य, जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है, उसके दैनिक कार्यकलापों को भी सम्मिलित कर रहा है । यद्यपि यह बदलाव सामाजिक इतिहास और नारीवाद के प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है । यह महत्वपूर्ण गद्य जो अलरीच की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है और जिसे सहभागी अच्छी तरह जानते हैं, भी अतीत के इतिहासकारों की अपेक्षा सक्रिय भूमिका को प्रदर्शित करता है । कथा-वाचिका अलरीच अपनी कहानी की गहराई में पूर्व के इतिहासकारों के द्वारा मार्था वालार्ड की डायरी को नकारने से उत्पन्न क्रोध को प्रदर्शित करती हुई, नायिका की तरह धैर्य और संकल्प का परिचय देते हुए उदासी दिखाती है क्योंकि मार्था की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है । धात्री को प्रकट करने के दौरान लॉरेल थैचर अलरीच स्वयं को प्रकट कर देती है। जब इस उद्धरण को अलरीच के सशक्त स्वर से पढ़ा गया तो उसने अनेक सहभागियों को रुला दिया । कॉलीन उनमें से एक थी । एक प्राथमिक विद्यालय की प्राचार्या कॉलीन ने अंतिम बार इतिहास तब पढ़ा था जब वह उच्च विद्यालय की छात्रा थी । उसने कार्यशाला

34. वही, पृ. 251

35 वही

36. वही, पृ. 41.

37. वही, पृ. 09

38. देखें पीटर नोविक, ''द नॉबेल ड्रीम''(शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस), 1987

के लिए हस्ताक्षर कर दिए क्योंकि उसका विद्यालय अन्तरानुशासनिक पाठ्यचर्या में भाग ले रहा था और वह यह समझना चाहती थी कि इतिहास को अन्य विषयों के साथ कैसे जोड़ा जाये । कार्यशाला के आरंभ में ही उसने स्वीकार किया कि उसकी याददाश्त कमजोर है । उसके विचार में इच्छाशक्ति की कमी का बयान ही इतिहासपरक अध्ययन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है । किन्तु कार्यशाला के खत्म होने तक कॉलीन आश्चर्यचकित थी । उसने तुरंत उन दस्तावेजों को पढ़ा । वह मार्था के काम के अन्तहीन चक्र, उसके घर का पूरा विवरण, मां की कठोर मांगों, महिलाओं का कैरियर, पत्नी और सामुदायिक नेता के विषय में आसानी से परिचित हो गई। मूल स्रोतों के साथ काम करने का मौका कॉलीन के लिए नया था और उसने इसे उत्साहजनक पाया । दो दिनों की कार्यशाला में वह सबसे मुखर और गंभीर सहभागियों में एक थी ।

कार्यशाला के अन्त में सहभागियों को इतिहास फिर से लिखने को कहा गया । उन्होंने क्या सीखा और औपनिवेशिक तथा उत्तर क्रांतिकारी अमेरिका के आर्थिक जीवन में महिलाओं की भूमिका पर भी एक आख्यान लिखने को कहा गया। हमने उन्हें जार्डन की पाठ्यपुस्तक के अंश में संशोधन करने या इसे पूरी तरह अलग रखकर आधार से ही आरंभ करने का विकल्प दिया । कॉलीन ने इसे अलग रखना पसन्द किया। उसने हाथ में कलम ली और कुछ वाक्य लिखते हुए और वह पाठ्यपुस्तक से कितनी नाराज थी इस पर कुछ बुदबुदाते हुए कागज को मरोड़ती हुई तेजी से लिखने लगी। वह 35 मिनट तक लगातार लिखती गई ।

आप अनुमान लगा सकते हैं कि कॉलीन के निबंध में उसके भावावेग के चिह्न थे जिसने संवेगों, गुस्से और नाराजगी को एक स्वर दिया, और इसकी पहचान उसे प्राथमिक दस्तावेजों के साथ काम करने का अनुभव हुआ किन्तु कारण मात्र यही नहीं था। कॉलीन का असंबद्ध लेखन पाठ्य पुस्तक के उस गद्य की तरह साथ-साथ चल रहा था जिसे वह हटाना चाहती थी । कॉलीन ने अपनी भावनाओं को उससे अलग रखने के लिए अन्य पुरुष में अपनी बात कही और वस्तुनिष्ठता लाने की कोशिश की । उसने इस लेखन में कहीं भी 'मैं' शब्द का प्रयोग नहीं किया । न्याय, शंका और बात पर जोर देने के संकेत गायब थे । सुनिश्चित होने के लिए विषयवस्तु को हटा दिया गया था । कॉलीन से हम सीखते हैं कि मार्था वालार्ड की तरह महिलाओं ने वस्त्र उत्पादन के लघु उद्योग लगाकर, मुर्गीपालन को बढ़ावा देकर और अन्य अनगिनत क्रिया-कलापों के द्वारा औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में योगदान किया। तथ्य बदल गये होंगे किन्तु इस संदर्भ का तात्विक महत्व अक्षुण्ण है ।

डेरेक की तरह कॉलीन ने अनुभव के दो क्षेत्रों के बीच संघर्ष का सामना किया - इन पुस्तकों को पढ़ने का वर्तमान अनुभव और उसके पहले के अनुभवों और खासकर उच्च विद्यालय की उसकी स्मृतियां । यह तनाव तब और परवान चढ़ा जब कॉलीन ने कागज पर कलम रख दी । जब उसे यह विश्वास हो गया कि इतिहास ने उसे एक औरत के रूप में तुच्छ और गौण समझा है और उसने दृढ़ता से अपना यह विश्वास भी पकड़ा हुआ था कि इतिहास लेखन के समय व्यक्ति को शान्त, अनासक्त, वैज्ञानिक दृष्टिवाला और विषयनिष्ठ होना चाहिए, जब वह इन के बीच संघर्ष को समाप्त करने का रास्ता नहीं ढूंढ सकी तो उसकी हताशा सतह पर आ गई । इतिहास लिखते समय कॉलीन ने अपने आप से संघर्ष किया किन्तु अपने स्वाभिमान को संबद्ध करने और अपने को इतिहास का अंग बनाने की अपेक्षा उसने अपने आवेग, गुस्से और कहानी से मैं के रूप में अपने अनुभव तक को समाप्त करते हुए उसने अपना काम अपने अहं को समाप्त करने में लगाया । परिणामस्वरूप अपनी रचना में कॉलीन का अहं कहीं नहीं मिला ।

हम जिस कहानी को कहना चाहते हैं उसे भावावेग विकृत और असंयमित कर देता है । परिदृश्यों का संतुलन हमें वर्तमान स्थिति से पीछे ले जाकर और विषयों को दूसरे तरीके से देखने की अपेक्षा करता है। जब क्रोध हमारे अंदर ही समाप्त हो जाता है तो ऐसा करना बहुत ही कठिन होता है। किन्तु कॉलीन दूसरे सिरे पर पहुंच गई । पाठकों के साथ अपनी व्यक्तिनिष्ठता को बांट करके भरपाई करने की अपेक्षा उसने अपने गहरे अनुभवों के माध्यम से यह छिपाया कि उसके पास तीव्र अनुभव नहीं हैं और उसने एक नई कहानी गढ़ने की कोशिश की । अन्ततः प्रारंभिक दस्तावेजों में वर्णित मार्था वालार्ड की ही तरह कॉलीन के स्वरचित दस्तावेज में भी वह एक स्थिर रूप में ही वर्णित है ।

इसके विपरीत कॉलीन की विषयवस्तु और 'द अमेरिकन्स' में अपेक्षाकृत ज्यादा समानता है बनिस्पत की 'ए मिडवाइफ्स टेल' के। पाठ्यपुस्तक और वे सभी चीजें जो संकेतित हैं, वे कॉलीन और कार्यशाला के अन्य कई सहभागियों के लिए अतीत की गाथा के संप्रेषण का न केवल एक तरीका बल्कि एकमात्र तरीका बन गयीं ।

परिचित और अजनबी के बीच तनाव को हम कैसे जान सकते हैं ? हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि जिसे हम अपने अतीत के साथ बांटते हैं उसके अनेक पक्ष अभी खुले हैं और वे हमें इस पर फिर से सोचने में आश्चर्य में डाल देते हैं कि मानवीय होने का मतलब है क्या ? बहुत पीछे का समय अपनी विचित्रता के कारण हमें अच्छा नहीं लगता - पुराने मिश्र की दफन प्रथा मध्यकाल की चिकित्सा, सलेम में डायनों को जलाना । किन्तु ताजे अतीत के बारे में क्या कहा जाए ? जो समय दूरदर्शनों, रेडियो, कारों का समय है, यह समय है जिसमें कपड़ों और बाल-सज्जा के अलावा सब सतही दिखता है । हम इस अतीत से कैसे संबंध स्थापित करें ताकि यह वर्तमान के धुंधले रूपान्तरण से कुछ ज्यादा लगे ।

ये प्रश्न केन्द्र में तब आए जब मैं सिएटल के एक उच्च विद्यालय में कक्षा निरीक्षण करने गया जहां 'पी.बी.एस. शृंखला के *'आइज ऑन द प्राइज'* को देखता आ रहा था। जिस दिन मैं गया उसके ठीक पहले छात्रों ने उस अंश को देखा था जिसमें गोव. रॉस बर्नेट, जेम्स मेरेडिथ को मिसिसिपी के विश्वविद्यालय में पंजीयन करने से रोकता है । आगे की बहस में शिक्षक ने छात्रों से पूछा कि बर्नेट ने मेरेडिथ के पंजीयन का विरोध क्यों किया । एक लड़के ने अपना हाथ उठाया और स्वयं ही कह डाला 'पक्षपात' । शिक्षक ने सिर हिलाया और चर्चा आगे बढ़ गई ।

उस सामान्य ''पक्षपात'' ने मुझे अस्थिर कर दिया । जातीय इतिहास के चार सौ वर्ष एक शब्द में बदल गए ।[39] इसने मुझे विचार करने पर विवश कर दिया कि हम पक्षपात, जातिवाद, सहिष्णुता, सादगी और निष्पक्षता जैसी अवधारणाओं के विषय में इतिहासपरक दृष्टि से सोचना आरंभ करें तो क्या होगा । हम किसी बिंदु पर इसे श्रेष्ठ सत्य के रूप में नहीं देखेंगे जो देश और काल से ऊपर है बल्कि विचार की विधियों के रूप में देखेंगे जिसकी जडें किसी खास ऐतिहासिक काल में हैं, जो विकसित और बड़ा होता है और वह अपने पहले के अहंकारों के लक्षण ढोए चलता है किन्तु परवर्ती पीढ़ियों के नए रूपों में प्रकट होता है ?[40] यदि गोव. बर्नेट की समस्या यह थी कि वह पक्षपाती था तो ये छात्र और इनके शिक्षक अब्राहम लिंकन को, जिसे बार-बार महान-उद्धारक या श्वेत प्रभु के रूप में चित्रित किया गया है और जिसका आधार सामाजिक प्रचलन और वर्तमान आवश्यकता है, को क्या मानेंगे ?[41]

इस प्रश्न का अध्ययन करने के लिए मैंने उन दस्तावेजों की शृंखलाओं को एक साथ रखा जिसमें अब्राहम लिंकन और उनका समकालीन स्टीफन डगलस, 1858 में इलिनॉय सीनेट की एक सीट के लिए चुनाव में लिंकन का विरोधी, धार्मिक नस्लवादी जो गुलामी को उचित ठहराने के लिए बाइबल का हवाला देने वाले जॉन बेल राबिन्सन और जॉन वेन एवरी तथा दासता विरोधी विलियम लाएड गैरिसन, जिसने गुलामों की मुक्ति के लिए अथक प्रयास किया था, इन सबके शब्द शामिल थे ।[42] इस दस्तावेज समूह में मैंने लिंकन से संबंधित तीन दस्तावेजों को भी शामिल किया जिनमें प्रत्येक उनके जीवन के भिन्न-भिन्न समय में उनकी भूमिका का प्रदर्शन करता है । इन तीन दस्तावेजों में लिंकन की भूमिका का रेखांकन ऐसे किया जा सकता है - 1841 में मिसीसीपी की यात्रा करते समय ''गुलामों को, एक जंजीर में बंधी मछलियों की तरह, एक साथ बंधा'' हुआ देखने वाला; ओटावा में डगलस समर्थकों की भीड़ के साथ बहस करता हुआ उम्मीदवार और युद्ध से थके हुए, घिर चुके राष्ट्रपति द्वारा मध्य अमेरिका में उपनिवेश की संभावना के लिए इकट्ठे हुए मुख्य गुलामों को 1862 में संबोधित करते समय का लिंकन।[43]

मैंने इन दस्तावेजों को कॉलेज में पढ़ रहे इतिहास के छात्रों एवं प्रशिक्षुओं के समूह को प्रस्तुत किया जो पब्लिक स्कूल में अध्यापक बनने के लिए पंचवर्षीय पाठ्यक्रम में पंजीकृत थे । मैंने उन्हें इन दस्तावेजों को पढ़ने और यह बताने के लिए कहा कि ये लिंकन के विचार पर क्या प्रकाश डालते हैं। यद्यपि सहभागियों की प्रतिक्रिया में काफी भिन्नता थी, फिर भी दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ दिखीं।

एक समूह ने लिंकन के शब्दों का प्रत्यक्ष मूल्यांकन किया । उन्होंने इन शब्दों को इन विशेष परिस्थितियों, जिनमें वे व्यक्त किए गए थे या 1860 और आज के समय के बीच की यात्रा से प्रभावित हुए लिंकन के विचार को प्रत्यक्ष दर्पण के रूप में माना। लिंकन एक नस्लवादी, शुद्ध और सरल था । दूसरे समूह के ज्यादा सावधान पाठकों ने यह माना कि इन शब्दों के लिए संदर्भ की जरूरत है । किन्तु उन्होंने इन कच्चे दस्तावेजों की सामग्री से संदर्भ

---

39. देखें विनथॉर्प डी. जॉर्डन, ह्वाइट ओवर ब्लैक : अमेरिकन ऐटिट्यूड द नीग्रो, - 1550-1812 (न्यूऑर्क : नॉटर्न, 1968) अध्याय 1

40. इन प्रश्नों को तैयार करने में डेविड लाऐन्थल का मैं आभारी हूं, ''दि टाइमलेस पास्ट: सम ऐंग्लो-अमेरिकन हिस्टोरिकल प्रिकान्सेन्शन्स'', जर्नल ऑफ अमेरिकन हिस्ट्री वाल्यूम - 75, 1989, पृ. 1263-80 और देखें - रोनाल्ड टी. तकाकी, ''ए डिफरेन्ट मिरर : ए हिस्ट्री ऑफ मल्टीकल्चरल अमेरिका'' (बोस्टन : लिट्टिल, ब्राउन, 1993)

41. लिंकन ने जिस रास्ते की कल्पना की थी उसके बारे में जानने के लिए देखें, - मेरिल पीटरसन कृत ''अमेरिकी मेमोरी'' (न्यूऑर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994) जाति के बारे में लिंकन के क्या विचार थे, इस पर संक्षिप्त विवरण के लिए देखें, ऑर्थर जिल्वर्सथमिथ कृत ''लिंकन एण्ड दी प्रॉब्लम ऑफ रेस : ए डिकेड ऑफ इंटरप्रिटेशन्स (स्प्रिंगफिल्ड III पेपर्स ऑफ दी अब्राहम लिंकन ऐसोसिएशन, 1980) पृष्ठ 22-45, ''लिंकन ने 1960 के अश्वेत शक्ति आंदोलन का चरम किस प्रकार देखा'' - के उदाहरण के लिए देखें, लेरोन बेनेट, ''वाज अब्राहम लिंकन ए ह्वाइट सुपरमेसिस्ट ? इबोनी, फरवरी 1968, पृष्ठ 35-42.

42. लिंकन की अपने समकालीनों के बीच अवस्थिति की प्रेरणा के स्रोतस्वरूप, जॉर्ज एम. फ्रेडिरिक्सन कृत ''द ब्लैक इमेज इन दि ह्वाइट माइंड'' (न्यूयॉर्क : हॉरपर एण्ड रॉ, 1971)

43. इन दस्तावेजों की प्रति के लिए देखें, सेमूएल एस. वाइनवर्ग और जेनिस फॉरनर का लेख ''कॉन्टेक्स्टूअलाइज्ड थिंकिंग इन हिस्ट्री'' जो मारिओ कॉरेटेरी और जेम्स बॉस संपादित पुस्तक ''कॉगनिटिव एण्ड इन्स्ट्रक्शनल प्रोसेसेज इन हिस्ट्री एण्ड दि सोशल साइन्सेज'' में है । (हिल्सडेल, एन. जे. : एर्लबॉम, 1994) पृष्ठ 285-308

बनाने की अपेक्षा समकालीन सामाजिक दुनिया से संदर्भ उधार लिया । उदाहरण के लिए एक भौतिकी का ज्ञाता लिंकन को आधुनिक रोनाल्ड रीगन मानता है जो अपने श्रोताओं की भीड़ के लिए उपयुक्त शब्दों का चयन करते हुए वोट पाने के लिए अपनी ही बातों में विरोधाभास प्रकट करता है। और सलाह के लिए दौरे के डाक्टरों और प्रबन्धकों की ओर मुखातिब होता है । इन दस्तावेजों को पढ़ने वाले एक विद्यार्थी की नजर में लिंकन एक ऐसे युवा थे जो निर्वाचित होने की कोशिश कर रहा है । मुझे रोजर ऍलिस जैसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति को समझने का सौभाग्य मिला । ''आप उस दौरे के डाक्टर को जानते हैं जो अपने अभियान निदेशक को प्रोत्साहित करता है, मीडिया निदेशक को प्रोत्साहित करता है ..... उनके कान में फुसफुसाता है कि इस खास विषय पर इस भीड़ को कुछ कहने के लिए यह उपयुक्त है । इसलिए जब मैं फिर से लिंकन के विषय में सोच रहा हूं , मैं उन्हें एक चापलूस राजनीतिज्ञ के रूप में देख रहा हूं । वे कहते हैं कि भीड़ के लिए जो सुविधाजनक होता है वह है उन्हें सुनना और आप उसे सचमुच कभी नहीं जान पाते जो वे सोच रहे हैं ।''[44]

इस अध्ययन को समझने का एक रास्ता इसे उदाहरण के रूप में देखना है जिसे डैनियल कैहनीमैन और ओमस ट्वेरस्की ने 'उपलब्ध स्वत: खोज प्रणाली' कहा है । मस्तिष्क का वह गुण जो संज्ञानात्मक उपकरणों के द्वारा समस्याओं को हल करने की अनुमति देता है और जिसे सबसे अधिक सुगमता से पाया जा सकता है ।[45] लिंकन की स्थिति में स्पष्ट विसंगति को देखकर हमारे पास के समकालीन संदर्भ एक विशिष्ठ मायना पा लेते हैं, मसलन प्रेस कान्फ्रेन्स में दौरे का डाक्टर असंगत सूचना को सही करने की सलाह देता है । यद्यपि हम 1860 और 1990 के बीच में राजनैतिक प्रक्रिया में बड़े तकनीकी परिवर्तन को जानते हैं, हम प्राय: चिन्तन के तरीके में एकरूपता पाते हैं जो समय की खाई को पाट देता है ।

इस अध्ययन में लिंकन और डगलस, जेम्स मिशेनर के उपन्यास के पात्रों की तरह बन गए जो हास्यप्रद कपड़े पहनते हैं। किन्तु जिनका व्यवहार और शिष्टता हमारे निकट पड़ौसी की तरह होती है, सो ये हमारे प्रमुख समकालीन हो गए । दूसरे शब्दों में 'वर्तमानवाद' - वर्तमान के चश्मे से अतीत को देखने की क्रिया कोई बुरी आदत नहीं है, जिसमें हम फंस गये हैं । यह उसकी जगह हमारी मनोवैज्ञानिक दशा है, चिन्तन का तरीका है जिसके लिए बहुत कम प्रयास करना होता है और जो सहजता के साथ आ जाता है। यदि लिंकन दो भिन्न बातें कहते प्रतीत हो रहे हैं तो इसका कारण है कि वे दो भिन्न श्रोताओं के सामने बोल रहे हैं क्योंकि हमारी दुनिया में हम ठीक-ठीक जानते हैं कि क्यों बॉब डॉल कनास में गेहूं की खेती करने वाले किसानों से दूसरी बात कहेंगे और न्यूयार्क शहर के शेयर दलालों से दूसरी बात । लिंकन के शब्दों में विरोधाभास को दूर करने पर हम देखते हैं कि उसका लक्ष्य निर्वाचित होना है और उस काम में दौरे के डाक्टर उसकी सहायता करने के लिए मिल गए हैं ।[46]

मैंने कई कार्यरत इतिहासकारों को उन्हीं दस्तावेजों को पढ़ने के लिए कहकर अपने अध्ययन का फलक बड़ा किया । उनमें से कुछ लिंकन के बारे में बहुत जानते हैं और उनके बारे में पुस्तकें लिखी हैं । दूसरे स्नातक से नीचे के सर्वे पाठ्यक्रम की कक्षाओं में कुछ व्याख्यान देने के अलावा इस विषय में बहुत कम जानते हैं। बॉब आल्स्टन,एक अधेड़ कॉकेसियन अमेरिकी इस दूसरे समूह में ठीक बैठ गए ।[47] अपने विभाग के अधिकांश सदस्यों की तरह उसने स्नातक स्तर के नीचे के सर्वे पाठ्यक्रम की कक्षाओं में अमेरिकी इतिहास के लगभग तमाम हिस्से को पढाया लेकिन उनमें से अधिकतर कक्षा में अलग-अलग विशेषज्ञता की थी। स्नातक स्कूल में उन्होंने 'गृह-युद्ध' से संबंधित परीक्षा ली थी किन्तु तबसे उसने इस काल को विस्तार से नहीं पढ़ा।

आल्स्टन के लिए यह काम आसान नहीं था और आरंभ में उनका अध्ययन कॉलेज के प्रबुद्ध छात्रों की तुलना में वस्तुत: अस्पष्ट था। किन्तु आरंभ से ही ओटावा में दिए गए डगलस के आंरभिक कथन के बारे में आल्स्टन की अज्ञानता स्पष्ट तौर से दिख रही थी।

मैंने लिंकन के विचार के बारे में जो कुछ भी लिखा है उसके बारे में अधिक नहीं जानता । मेरा तात्पर्य यह है कि क्योंकि मैंने इसे पढ़ा और डगलस को लिंकन की अपनी दृष्टि से व्याख्या करते देखा इसलिए लिंकन के बारे में मैं जो जानता हूं या जो नहीं जानता उसके बारे में पूरी तरह आश्वस्त नहीं हूं । डगलस ने इसे पुष्ट कर दिया मानो लिंकन विश्वास करता है कि वे काले या गोरे वस्तुत: हर स्तर पर बराबर हैं किन्तु मुझे नहीं मालूम कि लिंकन का खुद इस पर किस सीमा तक विश्वास था। मुझे मालूम है कि यदि वे उसी

44. वही, पृ. 294

45. डेनियल कॉनेमन और एमॉस ट्रेवेस्र्की : ''ऑन द साइकोलॉजी ऑफ प्रिडिक्शन, ''साइकोलॉजकल रिव्यू, वाल्यूम - 80, 1973 पृष्ठ 237-51)

46. स्पष्ट कर दें कि यह कुछ गंभीर तथा प्रतिबिम्बित पाठों से जुड़ा था ।

47. दूसरे अन्य सभी व्यक्तिगत नाम की तरह, जिनका मैंने यहां उल्लेख किया है, यह भी छद्म नाम है ।

समाज में बराबर हैं तो वह उन्हें (गोरों और कालो को) एक साथ करने की चिंता के प्रति व्यावहारिक रूप से सचेत थे किन्तु मैं कुछ दूसरे निर्णय के विषय में लिंकन के विचार के बारे में अधिक नहीं जानता।

लिंकन द्वारा डगलस के विचारों के खण्डन वाले दूसरे दस्तावेज में लिंकन कहते हैं कि अलग-अलग नस्लों के बीच में ''राजनीतिक और सामाजिक समानता को लाने की आवश्यकता नहीं है''। इस बिन्दु पर आल्स्टन इस वाक्य को फिर से पढ़कर थोड़ा रुक गया । उसने वाक्य को एक बार फिर पढ़ा और फिर से यह सोचने की कोशिश की कि डगलस का लिंकन के विचारों के संदर्भ में यह कथन किस हद तक सही है कि दोनो नस्ल बराबर हैं । खासतौर से तब जब वह (डगलस) उस क्षेत्र से बाहर का होगा जिसे लिंकन राजनैतिक और सामाजिक समानता के रूप में जानता है । सात पंक्तियों के बाद आल्स्टन फिर से रुक गया ''मैं वापस लौटकर उसी वाक्य को पुन: पढ़ रहा हूं । ये 19 वीं शताब्दी के वक्ता ज्यादा उलझे वाक्यों को बोलते थे । उन्हें मजबूत पकड़ का अभ्यास नहीं था । मुझे आश्चर्य है कि 'भौतिक भेद' से उनका क्या मतलब है ।'' आल्स्टन ने अपना विश्लेषण जारी रखा ।

यदि अश्वेतों को ''जीवन, स्वतंत्रता और खुशी का प्राकृतिक अधिकार है'' तो कोई भी अनुमान लगा लेगा कि स्वतंत्रता और खुशी यह बताते हैं कि वे उसी काल में गुलाम नहीं हो सकते । उसी तरह यदि अश्वेतों को ''अपनी कमाई रोटी खाने का हक है'' तो उन्हें अपने श्रम के उत्पादन का भी अधिकार है और वह है खुशी या स्वतंत्रता की स्थिति । यदि यह किसी न किसी रूप में स्वाभाविक अधिकार है तो गुलामी उन स्वाभाविक अधिकारों के खिलाफ हो जायेगी।

जब कॉलेज के छात्र इस बिन्दु पर पहुंचे तो उन्होंने लिंकन के इस विरोधाभास को ढूंढने का प्रयास किया या फिर उन्होंने कई लिंकनों की कल्पना की, जिसने अलग-अलग लोगों के समक्ष अलग-अलग बातें कहीं । किन्तु आल्स्टन ने इस विरोधाभास को समाप्त न करके इस ओर ध्यान आकृष्ट कराकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। अगले पांच दस्तावेजों में उसका अध्ययन मेरे विचार में 'अज्ञान के वर्णन' के कठिन अभ्यास जैसा रहा। उसने प्रति दस्तावेज औसतन 4.2 प्रश्न पूछे । और उसने कुल मिलाकर 14 अलग-अलग जगहों पर मार्कर से रेखांकित किया है, जैसे - ''मैं इससे आगे नहीं जा सकता'' या ''मैं इसे समझ नहीं सकता ।'' केवल अपने काम के अन्त में व्याख्या जैसी चीज की चर्चा करता है । यह उस उद्धरण की प्रतिक्रिया में व्यक्त किया गया है जिसमें जॉन बेल रॉबिन्सन ने भगवान से गुलामी से छुटकारा देने की प्रार्थना की है । इस बिन्दु पर आल्स्टन ने निम्नलिखित टिप्पणी की है :

लिंकन ..... ईश्वर से प्राप्त कुछ शक्ति से युक्त होकर अश्वेतों के विषय में बात करता है किन्तु यह 'गुलामों की उपयोगिता' या 'गुलामों की दशा' ये सब वे विषय नहीं हैं जिनकी वह चर्चा करता है । मैं पुराने दस्तावेजों में से कुछ को ध्यान से देखने जा रहा हूं। मैं जो ढूंढ रहा हूं वह दोनों के बीच भौतिक अन्तर और स्वाभाविक अधिकार संबंधी उनके विचार हैं यदि वे इसे भगवान से पूरी तरह जोड़ते हैं ...(ये बिन्दियां संकेत कर रही हैं कि आल्स्टन ने पुराने दस्तावेजों के अध्ययन के लिए उसे फिर से पढ़ा) यह डगलस था.... जिसने हब्शी (नीग्रो) का ईश्वर से संबंध और स्वतंत्रता की घोषणा संबंधी लिंकन के विश्वास को जोड़ा । किन्तु यहां ..... लिंकन के उत्तर के संदर्भ में - मैं यहां ईश्वर के संदर्भ को खोज रहा हूं। मैं इसे अभी तक ढूंढ नहीं सका क्योंकि मैंने इसे अभी तक समाप्त नहीं किया है । उसने स्वतंत्रता की घोषणा को उद्धत किया।

किन्तु मैरी स्पीड को भेजे पत्र में ..... उसने यह कहा कि ''यह कैसा सत्य है कि ईश्वर मनुष्य को सबसे बुरी हालतों को सहन करने लायक बना देता है ।'' किन्तु लिंकन के अनुसार ईश्वर गुलामी को ऐसी स्थिति या रूप में प्रस्तुत नहीं करता है जिसमें अश्वेत स्वयं को उसमें पायें। लिंकन इन विषयों से उबरना चाहता है, वह स्वतंत्रता की बात करता है, उसके दिमाग में ये चीजें कहां से आई, इसके बारे में मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता और वह स्वाभाविक भेदों की बात करता है । किन्तु वह ईश्वर को इन बातों के अलावा और कहीं नहीं लाता कि ईश्वर निर्माण करता है, ईश्वर लोगों को मनुष्य की सबसे बुरी हालतों को सहन करने योग्य बनाने की अनुमति देता है । ..... और यह उसकी दया का एक प्रकार है न कि उनकी स्थिति या व्यवहार पर रोक लगाने का कोई तरीका ।[48]

यह एक गंभीर उद्धरण है जिसमें गुणों की व्याख्या स्वत: हो जाती है । इस उल्टी-पुल्टी टिप्पणी के दौरान आल्स्टन ने पुराने दस्तावेजों को आठ भिन्न स्थलों पर उद्धृत किया। उसने सीखा कि जब रॉबिन्सन ईश्वर से गुलामी को मनुष्यता के निचले तबके के रूप में उचित ठहराने की प्रार्थना करता है, तब लिंकन नस्लों को एक समान मानवीयता से संबद्ध करने की प्रार्थना करता है । इस अन्तर शाब्दिक संरचना के माध्यम से आल्स्टन यह जान जाता है कि लिंकन अफ्रीकियों की समानता को ईश्वर से प्रार्थना के द्वारा उचित नहीं ठहराता बल्कि वह 'स्वाभाविक अधिकार' की प्रार्थना करता है,लिंकन की यह व्याख्या आश्चर्यजनक तौर से रिचर्ड विवर की व्याख्या 'वर्णन के द्वारा बहस' के काफी निकट है ।[49] यद्यपि

48. पूरे उद्धरण के लिए देखें , सैम बाईनबर्ग, ''रीडिंग अब्राहम लिंकन: एन एक्सपर्ट - एक्सपर्ट स्टडी इन द इन्टरप्रिटेशन ऑफ हिस्टोरिकल टेस्ट्स'', कॉगनिटिव साईंस, वाल्यूम -22 1998, पृ. 319-46. यह लेख अध्ययन के वर्गीकरण को बताता है और प्रयोग में लाए गए प्रारंभिक दस्तावेजों को मुहैया कराता है ।
49. रिचर्ड विवर, ''द एथिक्स ऑफ रेटॅरिक (साउथबेन्ड : गेटवे, 1953)

आल्स्टन ने यह काम उलझन और प्रश्नों के साथ शुरू किया पर इसे उसने लिंकन को लेकर एक सूक्ष्म और परिष्कृत समझ के साथ समाप्त किया ।

आल्स्टन ने लिंकन के संदर्भ में यहां जो कुछ भी किया, 'स्थापन' या 'प्रस्तुति' की धारणाओं के द्वारा उसकी गलत व्याख्या की गई, जो टेढ़ी-मेढ़ी और उलझन भरी कल्पनाओं का निर्माण करती है, जिसमें टुकड़ों को पहले से विद्यमान ढांचे में स्थापित कर दिया जाता है । संदर्भ न तो 'पाए गए' और न ही 'ढूंढे गये' और शब्दों को संदर्भ के अनुसार नहीं रखा गया । संदर्भ की निष्पत्ति लैटिन 'कान्टीक्सियर' से हुई है जिसका अर्थ एक साथ गूंथना और एक तरीके से वस्तुओं को जोड़ने की सक्रिय प्रक्रिया में लगाना है। यह एक नई चीज है जिसे आल्स्टन ने बताया। यह वह चीज है जो दस्तावेजों के अध्ययन और उसकी अज्ञानता से जूझने से पहले नहीं थी।

आल्स्टन जिन प्रश्नों को पूछता है वे ही सृजन के साधन हैं । उसके प्रश्न वर्तमान ज्ञान और अतीत की स्थितियों के बीच के अन्तराल में होते हैं । आल्स्टन आश्वस्त होने में माहिर है किन्तु जिस अर्थ में उस शब्द (माहिर) का प्रयोग किया जाता है वह उससे बिल्कुल भिन्न अर्थ में माहिर है । उसकी विशेषता उस विषय के व्यापक ज्ञान में नहीं है बल्कि एक डगमगाहट के बाद स्वयं को संभालने की है। वह जो नहीं जानता उससे ऊबने और अपने नए ज्ञान को दिशा देने में भी माहिर है । आल्स्टन अपने शुरू के प्रभावों से पीछे हटने, अपने आप से प्रश्न करने और उन प्रश्नों को सही रास्ते पर रखने, जो नई चीज जानने की ओर सामूहिक रूप से संकेत करते हैं, में माहिर है। ऐसी दृष्टि के लिए कौशल, तकनीक और प्रभूत ज्ञान की आवश्यकता होती है । किन्तु इतिहास का विस्तृत ज्ञान कुछ और ही है । यह वह कार्य है जो हृदय को आकर्षित करता है ।

उदाहरण के लिए जब आल्स्टन को मुक्त किए हुए गुलामों को संबोधित करने से संबद्ध इस वाक्यांश से मुठभेड़ करनी पड़ी कि ''हमें श्वेतों की तरह चिन्तन करने वाले योग्य लोग चाहियें'', वह न केवल उसकी भाषा से उलझन में पड़ गया बल्कि उससे पूरी तरह हिल गया । किन्तु अपनी असहजता को इस बात से समाप्त करने की अपेक्षा कि लिंकन नस्लवादी था, आल्स्टन इस असहजता को कई दस्तावेजों तक ढोता रहा । जब उसने अपना सर हिलाते हुए कहा कि ''मैं नहीं जानता, लिंकन क्या कह रहा है ''। उसके कहने का मतलब यह नहीं था कि वह उस पृष्ठ के शब्दों के कारण उलझन में पड़ गया है, उसका तात्पर्य कुछ अधिक था । वह इन शब्दों से बने संसार के कारण उलझ गया । जिस संसार में कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को खरीदने बाजार में जा सकता है । उस परिवेश में लिंकन के शब्दों पर उसे आश्चर्य था ।[50] और एक आधुनिक इतिहासकार के रूप में वह जो नहीं जानता या उसी ने उसे लिंकन के भाव को पूरी तरह समझने से रोक दिया ।

आल्स्टन का अध्ययन हमारे समकालीन अनुभव और जातियों के इतिहास के विस्तार के खुलेपन के प्रति दीनता दिखाता है । यह लोगों को उतनी आसानी से समझना जितना हम अपने को समझते हैं, की हमारी योग्यता पर संदेह करने का लाभ देता है । इसका यह मतलब नहीं कि हम अतीत का मूल्यांकन नहीं कर सकते। किन्तु इसका मतलब यह है कि मूल्यांकन करने में जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए । हमारे पाठकों ने इन दस्तावेजों का उपयोग अपने पहले के विश्वासों को पुख्ता करने में किया । उन्होंने अतीत का सामना किया और उसका वर्गीकरण किया। आल्स्टन ने अतीत का सामना किया और उससे कुछ सीखा ।

कई साल पहले मैं 'सिंडलर्स लिस्ट' देखने गया था । मैं स्टीवन स्पीलबर्ग के काम 'माता-पिता क्या नहीं है,' से काफी समय तक परिचित रहा था इसलिए सतर्क था । मैं तुरंत सिनेमाघर में घुस गया किन्तु वर्षों बाद भी मेरे जेहन में जो बात है वह है अंतिम विश्वास डगमगाने के बाद की स्थिति । मैंने देखा कि वह मनुष्य मेरे सामने से अपनी पत्नी की ओर मुड़ा और बोला - ''मैं यह अब तक नहीं जान सका था कि उसके बाद क्या हुआ । पर अब मैं जान गया हूं ।''

मैं इस टिप्पणी में मैं कुछ बहुत ज्यादा नहीं देखना चाहता, केवल यह ध्यान में रहे कि यह भी वर्तमान का एक अंश है जिसे क्रैको के एक स्थल पर बनाया गया है, जिसने इस व्यक्ति में समझ उत्पन्न की है । मैं ज्योंहि थियेटर में बैठा, मेरे विचार इतालवी रसायनज्ञ प्राइमों लेवी द्वारा निर्मित समझ की उलझन पर ठहर गए जिसके संगीतात्मक और ..... यह ध्यान में रहे कि लेखन मुझे हमेशा अन्तर्दृष्टि देते हैं । लेवी ने लिखा है कि जो प्रश्न हमारे सामने रखे जाते हैं उनमें एक प्रश्न कभी भी छिपा नहीं रहता । वास्तव में जैसे जैसे समय बीतता जा रहा है यह और दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त हो रहा है। और इस पर संदेह कम होता जा रहा है ।[51] जो प्रश्न लेवी ने उठाया है वह वस्तुत: तीन हिस्सों का प्रश्न है, 1. तुम क्यों नहीं भाग गये ? 2. तुमने क्यों नहीं विद्रोह किया ? 3. उन्होंने जब तुम्हें पकड़ा इसके पहले क्यों नहीं भाग गए ?

लेवी ने एक प्राथमिक विद्यालय में पांचवी ग्रेड के समूह से बात की थी और जो कुछ हुआ उसका वर्णन किया है : ''एक सावधान दिखने वाले लड़के ने, जो स्पष्ट रूप से कक्षा का प्रमुख

50. इस संदर्भ में देखें क्रेंटीन स्कीनर्र, ''मिनिंग एण्ड अंडरस्टैंडिंग इन द हिस्ट्री ऑफ आईडियाज,'' हिस्ट्री एण्ड थ्योरी, वाल्यूम-8, 1969 पृष्ठ 3-53.

51. प्राइमो लेवी, द ड्रोओन्ड एण्ड द सेण्ड (न्यूऑर्क : विन्टेज, 1989) पृ. - 150-51.

दिख रहा था, मुझसे बाध्यकारी प्रश्न पूछा ''आपने छोड़ क्यों नहीं दिया?'' मैंने यहां जो कुछ लिखा है इसकी व्याख्या संक्षेप में उससे कर दी। अब उसने पूरी तरह विश्वस्त होकर मुझसे श्यामपट्ट पर प्रेक्षण गुम्बद, दरवाजों, कांटेदार तारों और बिजली स्टेशन को चिन्हित करने वाले स्थान का चित्र बनाने के लिए कहा । मैंने हर संभव प्रयास किया जिसे तीस जोडे जिज्ञासु आंखें देख रही थीं । मेरे संभाषी ने कुछ क्षणों तक मेरी ड्राइंग को ध्यान से देखा, मुझसे कुछ स्पष्ट करने को कहा और तब उसने मुझे अपनी बनाई योजना बताई: यहां रात में उसने एक संतरी का गला काट दिया और उसके कपड़े पहन लिए, फिर उसके बाद बिजली स्टेशन की ओर दौड़ा और बिजली काट दी ताकि खोजी प्रकाश बुझ जाए, उच्च शक्ति वाले विद्युत बाड़ बेकार हो जाएं । उसके बाद मैं बिना किसी तकलीफ के उस जगह को छोड दूं । उसने गंभीरतापूर्वक कहा ''क्योंकि यह आपके साथ फिर से हो सकता है इसलिए जैसा मैंने कहा वैसा कीजिए । आप देखेंगे कि आप इसे करने में समर्थ हैं।''[52]

उस लड़के ने वह सब कुछ किया जो हम अपने छात्रों से चाहते हैं । वह विषयवस्तु से जुड़ा रहा, अपने पूर्व ज्ञान का स्मरण किया, उसने प्रश्न बनाए और समाधान प्रस्तुत किया । हम उस बच्चे के प्रश्न का कारण उसकी कम उम्र मानते हैं किन्तु यह याद रखना चाहिए कि यही प्रश्न अधिक उम्र वाले और अधिक जानकार लोगों द्वारा उठाये गये हैं । इस बच्चे को हममें से कइयों की तरह लेवी का अनुभव संदेह उत्पन्न कराता है : यह अल्पवयस्क यह विश्वास नहीं कर सकता कि उसके दिमाग में जो है उनमें से अधिकांश इतनी आसानी से भूल जाएगा। इसके उत्तर में प्राइमों लेवी मुख्य प्रतिपाद्यों में से एक को दुहराता है : ''हमारे ज्वलंत अनुभव'' के आयामों पर विश्वास के द्वारा अतीत के लोगों को जानने के प्रलोभन की मैंने खोज की है ।

किन्तु लेवी के लिए उसके इतिहासपरक ज्ञान की अपेक्षा यह समस्या बड़ी है । 'दूसरों को समझने की हमारी अयोग्यता' वर्तमान पर भी अतीत से कम लागू नहीं होती । इतिहास का अध्ययन हमारे समय में इतना महत्वपूर्ण है क्योंकि राष्ट्रीय ऐजेण्डे में विविधता के मुद्दे हावी हो जाते हैं। दूसरों के बारे में जानने के लिए, कि वे उस रास्ते की दूसरी ओर किस प्रकार रहते हैं या हजारों वर्ष में विभाजित समय में किसी अन्य भाग में रहते थे, हमारी समझ को शिक्षा की जरूरत है । यदि इतिहास को ठीक से पढ़ाया जाए तो यही व्यावहारिक ज्ञान मिलता है । इसके विपरीत हमें दूसरे के विषय में जानने में जो तत्व सहायक हैं, वे हैं उन्हें जानने की हमारी क्षमता पर अविश्वास, असाधारण समझ की योग्यता के प्रति संशय, जो हमारे अपने परिवेश के निर्माण में सहायक होता है ।

दिमाग की सोच के प्रति संदेह करना कभी-कभी कटुता या अहंकारवाद की ओर ले जाता है किन्तु कोई जरूरी नहीं कि ऐसा हो । जो विरोधाभास हम दूसरों में देखते हैं वे हमें अपने बारे में अधिक बता सकते हैं और यही बौद्धिक उदारता का मूल है। यही ज्ञान है जो अपने प्रति मोह को समाप्त करता है क्योंकि आत्ममोहवादी अतीत और वर्तमान दोनों को ही अपने चश्मे से देखता है । यही इतिहासपरक ज्ञान हमें विरोध करने, अपनी धारणा से आगे जाने, अपने छोटे जीवन से आगे बढ़ने और मानवीय इतिहास में महत्वहीन समय से आगे बढ़ने की शिक्षा देता है (लैटिन में कहें तो 'बाहर ले जाता है') । धर्मनिरपेक्ष पाठ्यक्रम में उनकी अपेक्षा अधिक शिक्षा देता है जो कभी धर्मशास्त्र के लिए सुरक्षित थे अर्थात् हमारे ज्ञान की सीमा की दीनता का गुण और मानव के इतिहास के फैलाव के विस्मय का गुण ।

चीन से भारत की यात्रा के दौरान मार्को पोलो ने बैसमैन जाने का साहस किया जिसे उसने सुमात्रा माना और जहां उसने गैंडे की एक प्रजाति को संयोगवश देखा, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था । किन्तु जैसा उसकी डायरी में लिखा है उसने इसे इस रूप में नहीं देखा बल्कि उसने एकसींगी को देखा जो हाथी से थोडे ही छोटे होते हैं । उनके भैंस की तरह बाल और ललाट के बीच एक बड़ी काली सींग होती है । वे अपने सींग से हमला नहीं करते बल्कि अपनी जीभ और घुटनों से हमला करते हैं क्योंकि उनकी जीभें लंबी, नुकीली हड्डियों से बनी होती हैं ..... । वे देखने में बहुत बदसूरत जानवर होते हैं ..... किन्तु वे छोटी उम्र के सुन्दर पशुओं के वश में स्वयं हो जाते हैं ..... तब उतने बदसूरत नहीं लगते जैसा हम उनका वर्णन करते हैं ।[53]

इतिहास के साथ हमारे अपने टकराव हमें गैंडे के विषय में जानने या एक सींगी के बारे में जानने की छूट देते हैं । हम स्वाभाविक रूप से एक सींगियों के प्रति झुकते हैं क्योकि वे सुन्दर और पालतू होते हैं किन्तु यह गेंडा ही है जो हमें, हमारी कल्पना की पहुंच से ज्यादा जानने का अवसर देता है । ◆

प्रारंभिक मसविदे पर टीका-टिप्पणी के लिए वाईनबर्ग ने निम्न लोगों - पीटर सेक्सस, पीटर स्टर्नस, सुसान मोसबर्ग, डेवी केर्डमैन, डेविड लाऐन्थल, वेरोनिका बोएक्स, मॉनसिल्ला, होबर्ड गॉर्डनर, क्रिस ब्रोआनिंग, केन्ट ज्वेल और हार्फिया विश्वविद्यालय में वर्ष 1997-98 में इतिहास बोध के सम्मेलन के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

52. वही, पृ. 157.

53. मार्को पोलो, दि ट्रेवल्स (सफ़फोल्क, इंग्लैण्ड : पेंगुईन, 1958) पृ. -253 इस बात की ओर निर्देश करने के लिए माईक ब्रिऑन्ट को धन्यवाद ।